SACH KI DASTAK, RNI : UPHIN/2017/75716
वाराणसी से प्रकाशित

वर्ष : 6, अंक : 1, अप्रैल 2022
मूल्य : 20 रु.

सच की दस्तक

कला, साहित्य, संस्कृति व सामाजिक सरोकार की मासिक पत्रिका

धार्मिक कट्टरता का जिम्मेदार कौन?

कलम इनकी जय बोल

अखण्ड भारत परिकल्पना

इंटरव्यू 'एक विचित्र पहल' (साधक)

एलियन कर रहे प्रेग्नेंट

सच की दस्तक के 5 वर्ष पूर्ण होने की हार्दिक शुभकामना

संदीप कुमार सिंह

पूर्व मंडल अध्यक्ष भाजपा

जनपद चन्दौली

स्व. डा. रामप्रकाश शाह

स्वतंत्रता संग्राम सेनानी

जन्म - 02.02.1924

मृत्यु - 05.12.2020

सच की दस्तक के 5 वर्ष पूर्ण होने की हार्दिक शुभकामना

रंजन कुमार शाह

युवा भाजपा नेता

पंडित दीनदयाल उपाध्याय नगर

जनपद चंदौली

चन्दन कुमार मौर्या

व्यवस्थापक, संगम पैलेस

जीटी रोड नई बस्ती

पीडीडीयू चंदौली

सच की दस्तक के 5 वर्ष पूर्ण होने की हार्दिक शुभकामना

विजय बाबा

माँ काली का भक्त

हरिशंकर पुर गांव सभा

पीडीडीयू चंदौली

सच की दस्तक के 5 वर्ष पूर्ण होने की हार्दिक शुभकामना

दुर्गा प्रसाद सैनी

जिलाध्यक्ष

अखिल भारतीय माली महासभा

जनपद -चन्दौली

सच की दस्तक

कला, साहित्य, संस्कृति व सामाजिक सरोकार की मासिक पत्रिका

आर.एन.आई. UPHIN/2017/75716

वर्ष : 06, अंक : 1, अप्रैल 2022

संरक्षक
इन्दू भूषण कोचगवे

संपादक
ब्रजेश कुमार

समाचार संपादक
आकांक्षा सक्सेना

खेल सम्पादक
मनोज उपाध्याय

उप सम्पादक
शिव मोहन सिंह

कानूनी सलाहकार
दिलीप कुमार सिंह (अधिवक्ता)

प्रूफ रीडर
बिपिन बिहारी उपाध्याय

प्रसार प्रभारी
अशोक सैनी

प्रसार सह प्रभारी
अजय राय
अशोक शर्मा
जितेन्द्र सिंह

ग्राफिक्स
संजय सिंह

सम्पादकीय कार्यालय
सी-6/2-एम, चेतगंज थाना के पास,
चेतगंज वाराणसी

पत्राचार (स्थानीय कार्यालय)
म.न. 1215ए, सुभाषनगर, मुगलसराय (चन्दौली)
मो.न. : 8299678756, 9598056904, 9450096479

पत्रिका में प्रकाशित समाचार / लेख से संपादक का सहमत होना आवश्यक नहीं है। सभी विवादों का न्याय क्षेत्र चन्दौली होगा। सभी पद अवैतनिक है।

स्वामी प्रकाशक मुद्रक ब्रजेश कुमार द्वारा यादव प्रिंटर्स, ए 14/36 भारद्वाजी टोला राजघाट वाराणसी से मुद्रित।

स्टेट ब्यूरो प्रभारी

1- मृदुला श्रीमाली - उत्तर प्रदेश
2- रोहित कोचगवे - उत्तराखण्ड
3- देवेन्द्र कुमावत - राजस्थान
4- दीपाली सोढ़ी - असम
5- प्रभाकर कुमार - बिहार
6- दीपक कुमार साहा - दिल्ली
7- श्री रामकृष्ण सहस्त्रबुद्धे - महाराष्ट्र

ब्यूरो संवाददाता / रिपोर्टर

1- डॉ निशा अग्रवाल विशेष संवाददाता जयपुर (राजस्थान)
2- विकास गौण जिला प्रभारी वाराणसी (यू.पी)
3- अक्षांशु सक्सेना जिला प्रभारी औरैया (यू.पी)
4- संजय कुमार दुबे जिला प्रभारी जौनपुर (यू.पी)
5- प्रमोद शुक्ला जिला प्रभारी बाँदा (यू.पी)
6- प्रतीक राय जिला प्रभारी गाजीपुर (यू.पी)
7- विनीत कुमार रिपोर्टर पीडीडीयू (यू.पी)
8- पवन कुमार शर्मा, जिला प्रभारी देहरादून (उत्तराखंड)

सदस्यता शुल्क

1 अंक	-	रु. 20/-
वार्षिक	-	रु. 300/-(डाकखर्च सहित)

Sach Ki Dastak
A/c. No. : 13751652000024
IFSC Code : PUNB0137510
Punjab National Bank

सच की दस्तक

कला, साहित्य, संस्कृति व सामाजिक सरोकार की मासिक पत्रिका

इस बार

क्र.स.	लेख	पेज न.
1.	संपादकीय - ब्रजेश कुमार, प्रधान संपादक	03
2.	धरोहर : कवि नागार्जुन	05
3.	धार्मिक कट्टरता का जिम्मेदार कौन? ब्रजेश कुमार, प्रधान संपादक	06
4.	अखंड भारत परिकल्पना - सच की दस्तक न्यूज नेटवर्क	09
5.	इंटरव्यू : 'एक विचित्र पहल' साधक - आकांक्षा सक्सेना, न्यूज ऐडीटर	12
6.	विशेष : जलियांवाला बाग - सच की दस्तक न्यूज नेटवर्क	16
7.	ब्रह्मीभूत लता मंगेशकर जी - अवनीत कौर दीपाली	17
7.	हे! वर्दी - आलोक आरा	18
9.	फिर बनी योगी सरकार - सच की दस्तक न्यूज नेटवर्क	19
10.	अद्भुत है रूहेलखंड का प्राचीन कला वैभव - अतुल मिश्र (पुरातत्वविद)	21
11.	आज का बच्चा क्यों ना सच्चा - मृदुला सिंह देऑल	23
11.	शब्द मीमांसा - डाक्टर छगन लाल गर्ग 'विज्ञ'	24
12.	डाक्टर प्रमोद शुक्ल 'अकोला' महाराष्ट्र की दो कविताएँ	27
13.	मै तुम्हें सहयोग दूँगी - मणि अग्रवाल 'मणिका'	28
13.	सुधा भारद्वाज, पुणे की दो लघु कथाएं	29
15.	डॉ. विद्या सिंह की दो लघुकथाएं	30
16.	ओ स्त्री - जया चौहान	31
18.	सेना का रंगमंच और नाट्यकरण - डॉ. सुशील उपाध्याय	32
19.	'विजयिनी' का हुआ लोकार्पण - सच की दस्तक न्यूज नेटवर्क	34
20.	कलम इनकी जय बोल - बलिदानी भगत सिंह - कृष्णकांत श्रीवास्तव	36
21.	पीवी सिंधु पहली बार बनीं स्विस ओपन चैंपियन - मनोज उपाध्याय, स्पोर्ट्स एडीटर	40
22.	सिनेमा की पहली बोलती फिल्म की यादें - सच की दस्तक न्यूज नेटवर्क	41
23.	ज़ायका - संवा के चावल खीर	45
24.	एलियन कर रहें प्रेग्नेंट? - सच की दस्तक न्यूज नेटवर्क	46
25.	बौद्धिक बेईमानी और राष्ट्र की पीड़ा - पंकज जगन्नाथ जयसवाल	49
26.	निशानेबाज़ मानवी का शौक ही बना उसका जुनून - चन्द्रकान्त पाराशर	52
27.	गर्मी का विकल्प - पोर्टेबल ए.सी. - सच की दस्तक न्यूज नेटवर्क	54
28.	शुरू करें जिंदगी - मनोज शाह 'मानस'	56
29.	स्वर कोकिला - श्री चन्द्र प्रकाश शर्मा 'आक्रोश'	56

संपादकीय

सच की दस्तक के पाठकों, शुभचिंतकों तथा इस पत्रिका के लिए सहयोग करने वाले अपने सभी सहयोगियों को पत्रिका के पाँच साल पूरा कर लेने के अवसर पर सभी को बहुत बहुत हार्दिक बधाई और धन्यवाद।

मित्रों! आप लोगों के साथ पाँच साल का सफर कैसे कट गया पता ही नहीं चला। आप से आशा भी है और विश्वास भी कि आगे के सफर में भी आप का सहयोग मिलता रहेगा।

दोस्तों, उत्तर प्रदेश सहित उत्तराखंड, मणिपुर, गोवा, पंजाब पांच राज्यों में चुनाव समाप्त हो गया और सभी राज्यों के मुख्यमंत्रीयों ने शपथ भी ले ली हैं, कार्यभार ग्रहण करके सरकार भी चलाने लगे। ये सब तो ठीक है, लेकिन पिछले कुछ दिनों से देश मे धार्मिक कट्टरता जिस प्रकार पाँव पसार रही है, वह देश के लिए अच्छा संकेत नहीं है। गोरखपुर के गोरखनाथ मंदिर में अचानक हुई गोलाबारी, राजस्थान के करौली में हिन्दू नववर्ष के अवसर में आर एस एस की जुलूस पर पत्थर बाजी, मध्यप्रदेश व गुजरात में हिंसा क्या संकेत दे रहे है? ये साजिश है या संयोग, यह कहना मुश्किल है, लेकिन धार्मिक कट्टरता के लिए जिम्मेदार कौन है यह यक्ष प्रश्न है। गोरखनाथ धाम में जिस प्रकार से एक युवक द्वारा सुरक्षाकर्मियों पर गोली चलाई गई उसे बिल्कुल सही नहीं ठहराया जा सकता जिसका मुस्लिम विद्वान समर्थन करने की कोशिश कर रहे हैं। जब कि गोरखनाथ धाम में आतंकी कनेक्शन का खुलासा हो रहा है। जो इस बात की तरफ इशारा करता है कि बाहरी शक्तियाँ भारत को अस्थिर करना चाह रही हैं। वर्तमान समय में देश में जगह जगह धार्मिक उन्माद फैलाया जा रहा है, यह ठीक नहीं है।

ऐसा लगता है कि एक वर्ग ऐसा है, जो भाजपा की जीत को पचा नहीं पा रहा है। कभी लगता की दिसम्बर 2022 में कुछ प्रदेशों में चुनाव होने वाले हैं उसके लिए ध्रुवीकरण करने की अभी से तैयारी शुरू हो गयी है? जो भी हो रहा है वह ठीक नहीं है। इस अंक में इसका विश्लेषण करेंगे। यह जानेंगे कि इसका क्या कारण है? गलत कार्यो को, धार्मिक कट्टरता की राजनीति करने वाले नेता गलत ठहराने के बजाय इसका खुल कर समर्थन कर रहे हैं।

देश में माननीय न्यायालय ने भी अजान सम्बंधित गाइडलाइन जारी की है। राजनीतिक दल उसे अमलीजामा पहनाने के बजाय राजनीति करते नज़र आ रहे जो देशहित में ठीक नहीं कहा जा सकता है।

सबको पता है संघ प्रमुख मोहन भागवत ने हरिद्वार में सन्तों के बीच अखंड भारत की सोच को सबके बीच रखा। यहाँ तक कि यह भी उन्होंने निर्धारित कर दिया कि कितने दिनों में अखंड भारत की कल्पना साकार होगी। पन्द्रह साल में पूरा भारत अखण्ड भारत होगा यह संघ प्रमुख ने कहा।

अब इस समय ऐसा विचार कैसे आया यह तो आर एस एस के शीर्ष नेतृत्व ही बता सकते हैं। लेकिन इतना तो कहा जा सकता कि यह आसान काम नहीं है। जब पाकिस्तान, कंधार, बांग्लादेश, म्यांमार, भूटान, श्रीलंका सब एक हो जाएंगे तब जाकर अखंड भारत बनेगा। यह बोलने और सुनने में तो बहुत अच्छा लगेगा, लेकिन एकीकरण करना आसान बात नहीं। कितनी भी राष्ट्रवाद की परिकल्पना की जाए लेकिन इसके नाम पर एकीकरण सम्भव फिल्हाल होता नहीं दिख रहा है। भारत की कभी विस्तारवादी नीति रही ही नहीं है। ऐसे में अचानक विस्तारवादी नीति कैसे आ जायेगी । यदि इसे संस्कृति रूप से अखण्ड भारत के बारे कहा जाता है तो काफी अच्छा होता। वर्तमान में रोजगार खत्म होते जा रहे है, साथ ही दिन प्रतिदिन बेरोजगारों की संख्या में लगातार अप्रत्याशित वृद्धि हो रही है जो देश के लिए घातक हो सकता है।

भारत युवाओं का देश कहा जाता है लेकिन युवा बेरोजगार होगा तो देश का विकास कैसे हो पायेगा। केवल

आकड़े प्रस्तुत कर देना कि मैंने इतना रोजगार दिया, वह सही नहीं है। जब सरकार ये शब्द कहती है तो शिक्षित बेरोजगारों को चुभती है, क्योंकि सरकार के काम धरातल पर नहीं कागजों पर होते हैं। ऐसे में सभी को मिलकर रोजगार के सृजन के उपायों पर मंथन करना चाहिए, तभी भारत के युवाओं के हाथ में रोजगार होगा और देश विकास करेगा व आत्मनिर्भर हो सकेगा।

देश के प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी जी निश्चित तौर पर इस पर काम कर रहे हैं।परन्तु सफलता उनकी अपेक्षा के अनुरूप अभी तक नहीं मिल पाई है, यह भी सही है।

ऐसे में अखण्ड भारत की बात अभी थोड़ी सी बेहमानी लगेगी। इसका यह मतलब बिल्कुल नहीं है कि अखंड भारत की कल्पना न की जाय या मेरी सोच इस अवधारणा के खिलाफ है, यह बात सत्य नहीं है। मेरा विचार है कि हम इतना आत्म निर्भर हो जायें कि हमसे कभी बिछड़ गए राष्ट्र स्वयं आकर पुनः हमसे मिलने का विचार करें, तब अच्छा होगा।

इस अंक में हमने कलम इनकी जय बोल के माध्यम से शहीद भगत सिंह की अनछुई बातों को सबके सामने लाने का प्रयास किया है। गरम दल के इन्हीं नौजवानों के द्वारा अंग्रेजों से हम लोगों को आजादी मिलने में सहायता मिली। भगत सिंह जैसे सच्चे देश भक्तों को पढ़ता हूँ तो एक प्रश्न मन में आने लगता है कि उस समय हमारे देश में नामी गिरामी बैरिस्टर हुआ करते थे। उनमें राष्ट्रपिता महात्मा गांधी, अम्बेडकर साहब सब थे लेकिन उनके बाद भी कोर्ट में इनकी पैरवी अच्छे तरीके से क्यों नहीं की गई। यदि पैरवी अच्छे ढंग से हुई होती तो निश्चित तौर से देश के लाल भगत सिंह बच जाते।

इस अंक में एक ऐसे सामाजिक कार्यकर्ता का साक्षात्कार भी पढ़ने को मिलेगा जिन्होंने समाज के लिए कुछ किया है। वर्तमान समय में लोगों को इस सामाजिक कार्यकर्ता से सीखने की आवश्यकता है। सबसे मजेदार बात यह है कि दूसरे ग्रह के प्राणी एलियन से एक लड़की के प्यार होने की खबर का विश्लेषण है, जिसे पढ़ा जा सकता है। साथ ही एक ऐसी राष्ट्र भक्ति है जिसके जिद के कारण पूरा देश बर्बाद हो गया। जी हाँ यह बात यूक्रेन की हो रही है। जिनके राष्ट्रवाद ने पूरे देश को खत्म करा दिया। अब यूक्रेन को बसाने में 20 वर्ष से अधिक समय लग जायेगा। अंत में एक बार पुनः आप लोगों को भगवान राम के जन्मोत्सव और बैशाखी की ढेर सारी बधाई।

धन्यवाद।

ब्रजेश कुमार

कवि नागार्जुन

(कवि नागार्जुन का असली नाम वैद्यनाथ मिश्र था।)
(1911-1998)

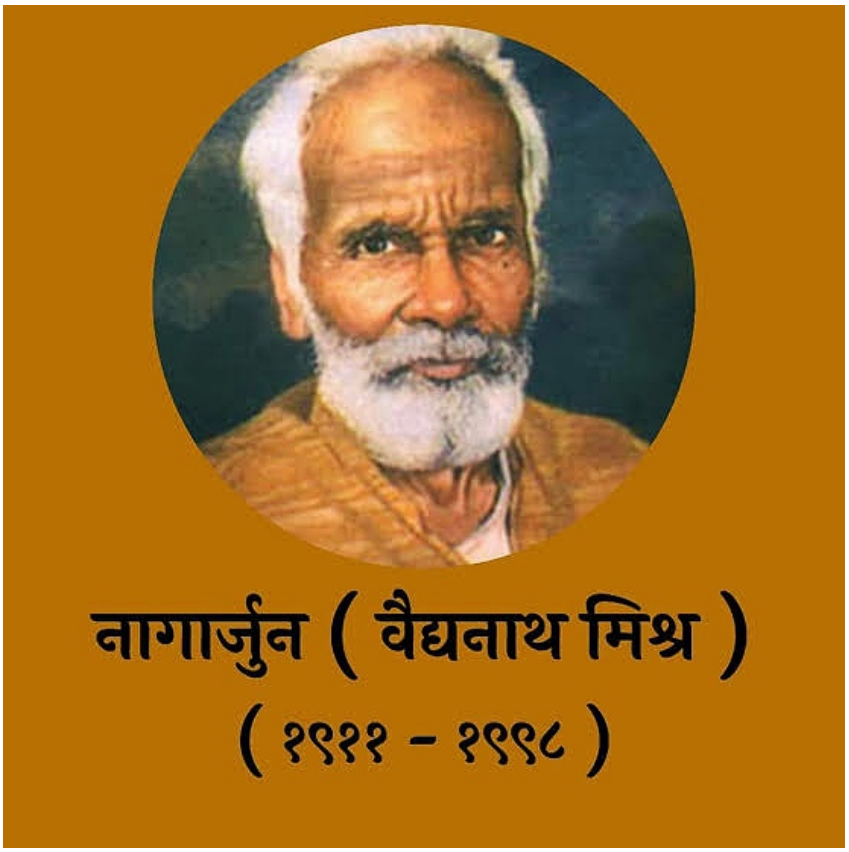

खूब़ तनी हो, खूब़ अड़ी हो, खूब़ लड़ी हो
प्रजातंत्र को कौन पूछता, तुम्हीं बड़ी हो
डर के मारे न्यायपालिका काँप गई है
वो बेचारी अगली गति-विधि भाँप गई है
देश बड़ा है, लोकतंत्र है सिक्का खोटा
तुम्हीं बड़ी हो, संविधान है तुम से छोटा
तुम से छोटा राष्ट्र हिन्द का, तुम्हीं बड़ी हो
खूब तनी हो,खूब अड़ी हो,खूब लड़ी हो
गांधी-नेहरू तुम से दोनों हुए उजागर

तुम्हें चाहते सारी दुनिया के नटनागर
रूस तुम्हें ताक़त देगा, अमरीका पैसा
तुम्हें पता है, किससे सौदा होगा कैसा
ब्रेझनेव के सिवा तुम्हारा नहीं सहारा
कौन सहेगा धौंस तुम्हारी, मान तुम्हारा
हल्दी. धनिया, मिर्च, प्याज सब तो लेती हो
याद करो औरों को तुम क्या-क्या देती हो
मौज, मज़ा, तिकड़म, खुदगर्जी, डाह, शरारत
बेईमानी, दगा, झूठ की चली तिजारत
मलका हो तुम ठगों-उचक्कों के गिरोह में
जिद्दी हो, बस, डूबी हो आकण्ठ मोह में
यह कमज़ोरी ही तुमको अब ले डूबेगी
आज नहीं तो कल सारी जनता ऊबेगी
लाभ-लोभ की पुतली हो, छलिया माई हो
मस्तानों की माँ हो, गुण्डों की धाई हो
सुदृढ़ प्रशासन का मतलब है प्रबल पिटाई
सुदृढ़ प्रशासन का मतलब है 'इन्द्रा' माई
बन्दूकें ही हुईं आज माध्यम शासन का
गोली ही पर्याय बन गई है राशन का
शिक्षा केन्द्र बनेंगे अब तो फौजी अड्डे
हुकुम चलाएँगे ताशों के तीन तिगड्डे
बेगम होगी, इर्द-गिर्द बस गूल्लू होंगे
मोर न होगा, हंस न होगा, उल्लू होंगे

■■

धार्मिक कट्टरता का जिम्मेदार कौन?

ब्रजेश कुमार
संपादक सच की दस्तक

भारत देश धर्मनिरपेक्षता के लिए जाना जाता है । देश में सभी धर्म के मानने वाले पूरी स्वतंत्रता से रहते हैं। सभी को अपने धर्म के अनुसार पूजा अर्चना करने की आजादी भारतीय संविधान के अनुसार दे रखी गयी।उनके बाद भी धार्मिक कट्टरता इन दिनों चरम सीमा पर है। यह कट्टरता इस प्रकार हावी हो गयी है कि एक धर्म के लोग दूसरे धर्म के लोगों को पसंद नहीं कर रहे हैं, जिसके कारण एक धर्म के लोगों द्वारा जुलूस निकालने पर दूसरे धर्म के अनुयायी फूलों के जगह पत्थर फेंक रहे हैं, जिससे धार्मिक उन्माद की स्थिति पैदा हो रही है, इसके पीछे किसकी साजिश है यह तो पता नहीं लग पा रहा है, जिसके कारण यह प्रश्न उठना लाजमी है कि धार्मिक कट्टरता के पीछे जिम्मेदार कौन है? एक घटना दिल्ली की है जब हनुमान जयंती पर दिल्ली में हिंदुओं द्वारा शोभायात्रा निकाली गयी तो मुस्लिम बाहुल्य क्षेत्र में पहुँचते ही पत्थरबाजी शुरू हो गयी जो

देखते ही देखते ही साम्प्रदायिक रंग ले लिया तलवारें निकली, कई राउंड गोलियां चली जिससे लोग घायल हो गए। इसमें पुलिस के लोग भी थे। इनमें दो पुलिस वालों को गोलियां लगी । इसी प्रकार की घटना हिन्दू नववर्ष के दौरान राजस्थान के करौली में जब राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ के स्वयंसेवकों द्वारा पथ संचलन किया जा रहा था तभी उन पर पत्थर बरसाए गए थे । जिससे हिंसा हुई थी उसमें भी कई लोगों को चोटे आई थी और धार्मिक उन्माद की स्थिति पैदा हो गई थी। इस घटना में गंभीर रूप से घायल हुए एक बच्चा अभी भी जीवन और मौत के बीच संघर्ष कर रहा है । यह घटना क्यों हुई राज्य सरकार जांच कर रही है ।

रामनवमी के दिन परंपरा अनुसार जब भगवान राम की शोभायात्रा निकाली जा रही थी तो मध्य प्रदेश, गुजरात, झारखंड में भी शोभा यात्रा के दौरान पत्थरों की बौछार की गई। जिसमें कई लोगों घायल हुए , दो की जान चली गई। इन सब घटनाओं में यह साफ हो रहा है कि एक संप्रदाय के लोग जुलूस निकाल रहे हैं तो दूसरे संप्रदाय के लोग उस पर फूलों की बारिश न कर नफरत की पत्थर बरसा रहे हैं ।। जहाँ भारत तरक्की की राह पर जा रहा है, वहीं कुछ विदेशी ताकतों से मिलकर देश को दंगों की आग में झोकने का प्रयास कर रही हैं । इसकी साजिस किसकी है। इस पर केंद्र सरकार को समय रहते जांच करते हुए दोषियों को कड़ी से कड़ी सजा देनी चाहिए ।यदि केंद्र सरकार नरमी बरती है तो पूरे देश में इस प्रकार की घटना को अंजाम देने वाले सक्रिय हो जाएंगे और देश साम्प्रदायिक दंगों में जलने लगेगा ।वर्तमान में जो घटनाएँ है घट रही हैं वह फिलहाल यही संकेत देती नजर आ रही है। इंटेलिजेंस ब्यूरो सेल क्या कर रहा है? इस पर केंद्र सरकार को सोचने की जरूरत है। दिल्ली के जहांगीरपुरी में हनुमान जयंती के मौके पर निकाली गई शोभायात्रा पर पथराव किया गया। इसके बाद गाड़ियों और दुकानों में आग लगा दी गई। जानकारी के अनुसार जहांगीरपुरी इलाके में कुशल सिनेमा के पास 16 अप्रैल की शाम करीब पौने सात हनुमान जन्मोत्सव की शोभायात्रा पर पथराव हुआ है। उपद्रवियों ने यहाँ पथराव के बाद आगजनी भी की है। इसके बाद दोनों पक्षों की तरफ से मौके पर एकत्र हुए लोगों ने कई गाड़ियों में तोड़फोड़ की और कुछ गाड़ियों व दुकान को आग के हवाले भी कर दिया। इतना ही नहीं उपद्रवियों के बीच तलवार और डंडे भी भांजे गए। घटना में पुलिसकर्मी समेत दोनों पक्षों के करीब दर्जन भर से ज्यादा लोग घायल हो गए हैं। घायलों को पास के अस्पताल में भर्ती कराया गया है।

रामनवमी के दिन 10 अप्रैल को झारखंड के लोहरदगा में संप्रादायिक हिंसा हुई। लोहरदगा में रामनवमी के अवसर पर शोभा यात्रा के दौरान पथराव हुआ था। असामाजिक तत्वों ने कई

गाड़ियों में आग लगा दी थी। रामनवमी के मेले में हिंसा भड़क गई है। पूरा शहर सांप्रदायिक हिंसा की चपेट में आ गया था। इस हिंसा में एक व्यक्ति की मौत भी हो गई थी। 12 से ज्यादा लोग हिंसा में घायल हो गए थे। यहां के स्थानीय प्रशासन के अनुसार इस हिंसा के पीछे बड़ी साजिश रची गई थी। जिला प्रशासन ने कहा है कि झारखंड में एक अरसे से स्लीपल सेल सक्रिय है, जिसकी वजह से हिंसक वारदात हुई है। गुजरात के दो शहरों में 10 अप्रैल को रामनवमी के जुलूस के दौरान हिंसा की घटना हुई। बताया जा रहा है कि हिम्मतनगर और खंभात शहर में रामनवमी के जुलूस के दौरान दो समुदायों के बीच सांप्रदायिक झड़प हो गई। इस दौरान लोगों ने एक-दूसरे पर पथराव भी किया। इससे कई दुकानें और वाहनों को नुकसान पहुंचा है। खंभात में हुई सांप्रदायिक झड़प में एक व्यक्ति की मौत हो गई जबकि एक अन्य घायल हो गया। मध्यप्रदेश के खरगोन में रामनवमी के दिन निकल रहे जुलूस में डीजे बजाए जाने को लेकर हुए विवाद के बाद सांप्रदायिक हिंसा भड़क उठी और जमकर पत्थरबाजी हुई पुलिस को आंसू गैस के गोले छोड़ने पड़े तो वहीं पेट्रोल पंप का भी भरपूर उपयोग किया गया। कई घरों और दुकानों में भी आग लगा दी गई। जिनमे के लोग घायल हो गए एक युवक की जान भी चली गयी। विडम्बना है हमारे देश की इस बलवे में भी वोट की राजनीति करते नजर आते है ।कांग्रेस हो अन्य विपक्षी पार्टियां कोई भी इनका प्रवक्ता या पार्टी का शीर्ष नेता सब लोग हिंदुओं में खोट देखते है। भले हिन्दू ही बलवे में मरा

हो।सब भाजपा से जोड़ कर एक पक्षीय मत देते है । जबकी जान तो इंसान की जाती है। हिन्दू हो या मुसलमान लेकिन राजनीति करने वाले अपना अलग ही दृष्टिकोण रखते है। वहीं भाजपा को भी इसी का लगता है कि हिंदू मरे तो मरे हिंदुओं के प्रति सिम्पैथी मिलेगी ही। सब राजनीति रोटी सकते नजर आते है।बलवा होने के बाद जिसका लाल मर गया वह वापस तो नहीं आयेगा चाहे उसके बाद हमलावरों का बुलडोजर से सब कुछ खत्म कर दो।

सवाल यह उठता है कि, पूरे भारतवर्ष के कई प्रदेश में हिंदुओं के पर्व पर पत्थर बाजी हुई, जमकर आगजनी हुई, इनमें कुछ की जान भी चली गयी।इस पर सरकार ने क्या कारगर उठाएं ये संदेश सार्वजनिक होना चाहिए।यदि किसी भी धर्म के मानने वाले हो और उनके पर्व पर बलवा हो तो सरकार की असफलता ही कहा जायेगा, इंटेलिजेंस इन सभी जगहों पर असफल हुई है जिसके कारण ये घटनाएं हुईं । सरकार को इसके लिए जिम्मेदार माना जा सकता है। लोगों की माने तो इन सभी जगहों पर काफी संख्या में बांगलादेशी मुस्लिम बाहर से आकर रह रहे है, जिनके ऊपर राजनीतिज्ञों की छत्रछाया है। उन सभी का धीरे धीरे राशनकार्ड, आधारकार्ड बनते हैं, फिर वोटर आई डी भी बन जाती है। उसके बाद उसी राजनीतिज्ञ लोगों के लिए कार्य का करने लगते है । रोहिंग्या मुसलमानों की संख्या दिल्ली सहित हर प्रदेशों में ज्यादा हो गयी है जो बाहरी देशों के इशारों पर काम करते है और इस तरह के घटनाओं को अंजाम देते है। ये पहले ही प्लानिंग करते है और तब जाकर घटना का अंजाम देते है। अचानक पत्थर कहाँ से एकत्र हो जाते, तलवार जैसे अस्त्र कहाँ से आ जाते । पेट्रोल बम बनाने के लिए शीशियां उपलब्ध कैसे हो जाती हैं? निश्चित तौर पर ये बलवे की प्लानिंग पहले करते है। यदि सरकार सही ढंग से छानबीन करे तो बांग्लादेशी रोहिंग्या मुसलमान ऐसी घटनाओं के लिए जिम्मेदार निकलेगी। सरकार को चाहिए कि इनकी पहचान करें और देश से बाहर करें।

■■

अखण्ड भारत परिकल्पना

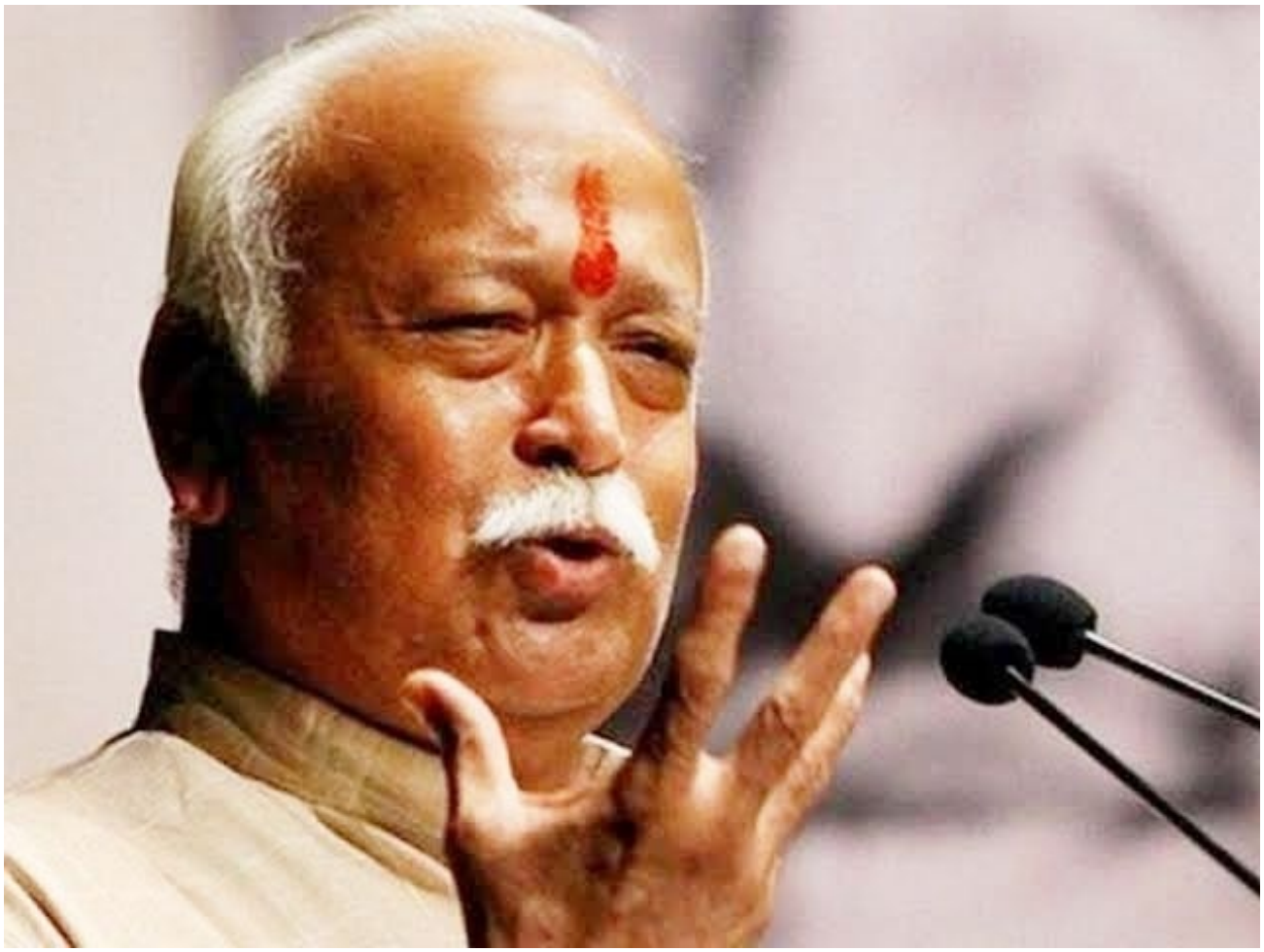

क्या सचमुच भारत अखंड भारत के रूप में आएगा, यह है यक्ष प्रश्न?.

जब हम अखण्ड भारत की बात करते हैं तो इस तथ्य को भी सामने रखना होगा कि 15 से 20 वर्षों में ऐसा क्या हो जाएगा की भारतवर्ष अपने पुराने रियासत को वापस लाने में सफल होगा।वर्तमान समय में हमारी आर्थिक स्थिति भी काफी अच्छी नही है।पिछले 3 वर्षों में तो भारत की जी. डी. पी काफी नीचे चली आयी।प्राचीन समय में जो देश अखण्ड भारत के हिस्से रहे वो भी आर्थिक दृष्टि से मजबूत नही है जो भारत को आर्थिक मोर्चे पर मजबूत बना सकें।बेरोजगार का आलम तो यह है युवा देश का तमगा तो लगा है लेकिन युवा यहां ही सबसे ज्यादा बेरोजगार है।इनका आंकड़ा भी दिन प्रतिदिन बहुत तेजी से बढ़ता जा रहा है।किसान भी परेशान हैं।ऐसे में आर. एस. एस. का कम समय में अखण्ड भारत बनाना दूर की कौड़ी लगती है। ऐसी बात राष्ट्रीय स्वयंसेवक के सुप्रीमो ने कह ही

दिया तो आप को समझना होगा की प्राचीन समय में अपना अखण्ड भारत कैसा रहा और कौन - कौन से देश हमारे अखंड भारत का हिस्सा रहे।

नेपाल - भले ही आज नेपाल के नेता अपने लोगों को खुश करने के लिए कहते हैं कि उनका देश कभी भी भारत का हिस्सा नहीं था, लेकिन लिच्छवि गणराज्य के अंतर्गत जो भी क्षेत्र आते थे, उनमें नेपाल भी शामिल था। उससे पहले वहाँ किरात वंश का शासन हुआ करता था। नेपाल में राजा जनक के महल के साथ-साथ वाल्मीकि आश्रम होना भी यह बताता है कि ये क्षेत्र कभी भारत का हिस्सा हुआ करता था।

लिच्छिवि राज्यों ने वैशाली को अपनी राजधानी बनाया था। अंग्रेजों का नेपाल के साथ 1816 में युद्ध भी हुआ था। नेपाली सैनिकों ने बहादुरी से लड़ाई की, लेकिन अंग्रेजों की जीत हुई। नेपाल ने खुद ही समर्पण करते हुए अपने कई क्षेत्र अंग्रेजों को दे दिए, जिसके बाद उनमें समझौता हुआ। इसके बाद अंग्रेजों ने बड़ी संख्या में नेपालियों को अपनी सेना में भर्ती किया। 1857 के स्वतंत्रता संग्राम में कई बार आग्रह के बावजूद नेपाल के नेताओं ने भारत की मदद नहीं की।

पाकिस्तान और बांग्लादेश- बांग्लादेश ही सबसे ताज़ा देश है, जो कभी भारत का हिस्सा हुआ करता था। इंदिरा गाँधी के समय में भारत-पाकिस्तान में युद्ध हुआ, जिसके बाद बांग्लादेश को आज़ादी मिली। इससे पहले ये पूर्वी पाकिस्तान हुआ करता था।ये दोनों भारत का हिस्सा थे विभाजन के बाद पाकिस्तान अलग हुआ था।

अफगानिस्तान- वो अंग्रेज ही थे, जिन्होंने 'ब्रिटिश इंडिया' और अफगानिस्तान के बीच डुरंड रेखा खींच दी थी। इस फैसले पर 12 नवंबर, 1893 को ब्रिटिश अधिकारी सर मोर्टिमर डुरंड और अफगानिस्तान के अमीर अब्दुर रहमान खान ने हस्ताक्षर किए थे। इस क्षेत्र के आसपास पंजाबी और पश्तून समुदाय की अच्छी-खासी जनसंख्या थी। इस्लामी धर्मांतरण का सबसे ज्यादा प्रभाव अफगानिस्तान में हुआ था, लयोंकी अरब यहीं से भारत में घुसे थे।अफगानिस्तान में मुस्लिम शासकों ने कंधार और काबुल जैसे शहरों का नामकरण कर के इन्हें अपना अड्डा बनाया। अगर हम महाभारत काल तक भी पीछे जाएँ तो उसमें अफगानिस्तान में स्थित गांधार साम्राज्य का जिक्र मिलता है। इसीलिए, शकुनि को 'गांधार नरेश' व धृतराष्ट्र की पत्नी को गांधारी कहा जाता था। 1750 तक अफगानिस्तान को भारत का हिस्सा ही माना जाता था।

श्रीलंका- भले ही भारत और श्रीलंका को समुद्र अलग कर देता हो, लेकिन इसके बावजूद भी ये कभी भारतवर्ष का ही हिस्सा हुआ करता था। श्रीलंका का नाम पहले सीलोन या फिर सिंहलद्वीप हुआ करता था। वहीं सम्राट अशोक के समय इस क्षेत्र का नाम ताम्रपर्णी हुआ करता था। सम्राट अशोक ने अपने बेटे महेंद्र और बेटी संघमित्रा को बौद्ध धर्म के प्रचार-प्रसार के लिए वहाँ भेजा था। इस तरह 'अखंड भारत' की परिकल्पना में श्रीलंका भी शामिल है।

म्यांमार- म्यांमार भी कभी भारत का हिस्सा हुआ करता था। इसका नाम पहले बर्मा था। भारत के स्वतंत्र होने से मात्र 10 वर्ष पहले, 1937 में अंग्रेजों ने इसे भारत से काट कर अलग कर दिया। 1921 में बर्मा की राजनीतिक स्थिति के अध्ययन के लिए साइमन कमीशन को वहाँ भेजा गया था। 1930 में साइमन कमीशन ने इसे भारत से काट कर अलग करने की सिफारिश की।

भूटान- वो दिन याद है जब अमेरिकी राष्ट्रपति डोनाल्ड ट्रम्प का एक वीडियो वायरल होने के बाद उनकी खूब खिल्ली उड़ाई गई थी, जिसमें उन्होंने भूटान को भारत का हिस्सा बता दिया था। प्राचीन काल में पूरे के पूरे हिमालय को भारत का ही हिस्सा माना जाता था। लेकिन, अगर मौर्य काल में उन्होंने ये बात कही होती तो उन पर कोई नहीं हँसता, क्योंकि तब भूटान भारत का ही हिस्सा हुआ करता था। अगर हम 'अखंड भारत' की परिकल्पना करते हैं तो मलेशिया और थाईलैंड भी इसमें आएँगे ही आएँगे, क्योंकि इन दोनों जगह कभी भारत से प्रभावित साम्राज्यों का राज हुआ करता था। श्रीविजय, केदारम और मजापाहित जैसे साम्राज्य एक तरह से भारतीय ही थे। चोल साम्राज्य के बारे में भी कहा जाता है कि उसने मलेशिया में विजय हासिल की थी। बाद में पुर्तगालियों ने यहाँ कब्ज़ा जमाया, जैसा उन्होंने गोवा और दमन एवं दीव में किया था। इंडोनेशिया में भी भारत के प्रभावित ऐसे ही साम्राज्य थे। तभी जावा में आज भी आपको इसकी झलक मिल जाती है। जैसे, उदाहरण के लिए कलिंगा साम्राज्य को ले लीजिए, जो बौद्ध धर्म से प्रभावित था। इसी तरह कादिरी साम्राज्य ने भी इंडोनेशिया पर

राज किया। जावा में सुंडा साम्राज्य भी था, जिसकी संस्कृति भारतीय ही थी। इस तरह आज जो भारत हम देश रहे हैं, वो अखंड भारत का एक तिहाई भी नहीं है। हमारा अस्तित्व व हमारी पहचान इससे काफी बड़ी है।

उपरोक्त देश भारत का हिस्सा थे। राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ की पहले से ही परिकल्पना रही कि भारतवर्ष हमारा अखंड भारत हो निश्चित तौर पर यह होना भी चाहिए । इस बार तो संघ प्रमुख मोहन भागवत ने इसे लेकर बड़ा बयान दे दिया ।राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ के सर संघचालक मोहन भागवत ने पिछले दिनों हरिद्वार में कहा कि सनातन धर्म ही हिंदू राष्ट्र है। इतना ही नहीं उन्होंने कहा, वैसे तो 20 से 25 साल में भारत अखंड भारत होगा. लेकिन अगर हम थोड़ा सा प्रयास करेंगे, तो स्वामी विवेकानंद और महर्षि अरविंद के सपनों का अखंड भारत 10 से 15 साल में ही बन जाएगा। इसे कोई रोकने वाला नहीं है, जो इसके रास्ते में जो आएंगे वह मिट जाएंगे । आरएसएस प्रमुख ने कहा, जिस प्रकार भगवान कृष्ण की उंगली से गोवर्धन पर्वत उठ गया था, उसी तरह संतों के आशीर्वाद से भारत फिर से अखंड भारत जल्द बनेगा। इसे कोई रोकने वाला नहीं है, लेकिन आमजन थोड़ा सा प्रयास करेंगे तो स्वामी विवेकानंद महर्षि अरविंद के सपनों का अखंड भारत 10 से 15 साल में ही बन जाएगा । भारत उत्थान की पटरी पर आगे बढ़ चला है।इसके रास्ते में जो आएंगे वह मिट जाएंगे। भारत अब उत्थान के बिना रुकने वाला नहीं है। भारत उत्थान की पटरी पर सरपट दौड़ रहा है सीटी बजा रहा है और कह रहा है उत्थान की इस यात्रा में सब उसके साथ आओ और उसको रोकने का प्रयास कोई न करें, जो कोई भी रोकने वाले हैं, वह साथ आ जाए । और अगर साथ नहीं आते तो रास्ते में न आए, रास्ते से हट जाए । संघ प्रमुख ने कहा कि एक हजार साल भारत की सनातन धर्म को समाप्त करने के प्रयास लगातार किए गए. लेकिन वह मिट गए, पर हम और सनातन धर्म आज भी मौजूद है।उन्होंने कहा कि भारत एक ऐसा देश है जहां दुनिया के हर प्रकार के व्यक्ति की दुष्ट प्रवृत्ति समाप्त हो जाती है।वह भारत में आकर या तो ठीक हो जाता है या फिर मिट जाता है। संघ प्रमुख द्वारा दिया गया यह बयान किस आधार पर है यह कहा नहीं जा सकता लेकिन उनके बयान को विरोधियों ने मखौल उड़ाना शुरू कर दिया है। सचमुच यदि भारत देश अपने संसाधनों का उपयोग करें तो निश्चित तौर पर हम आर्थिक दृष्टि से भी मजबूत होंगे और उस समय अखंड भारत की सोच निश्चित तौर पर साकार होगी।

■ ■

इंटरव्यू : 'एक विचित्र पहल' साधक मैं अंत्येष्टि स्थलों का भय मिटाना चाहता हूँ

संस्थापक डॉ. आनंद नाथ गुप्ता

आकांक्षा सक्सेना
न्यूज ऐडीटर सच की दस्तक

कल तक संसार जिस शरीर पर गर्व कर रहा था, आज मेरा वही तन, मेरे ही विरोधियों के पास बराबरी से जल रहा है। ऐसा लगता है मानो! मेरे असिद्ध संकल्पों के क्रंदन और अहं के अट्टहास, वासनाओं की मञ्जरियों की विरह व्यंजना,अंतरिक्ष चीरती महत्वाकांक्षाएं सब धूँ-धूँ करके राख होने को उन्मुक्त हुईं जाती हैं। आज मैं अलिप्त सा खुद को देख रहा हूँ।मौहरूप शतक शर्द ऋतु से पीछा छूट रहा है।मैं आज रातभर यहीं रहना चाह रहा हूँ, जहां जीवन में कभी नहीं आने का घोर पाप किया।शाम हो रही है दुःखी लोग अंधेरे में गिरते-पड़ते घरों को लौट रहे हैं, महिलाएं छिपते,सकुचातीं नहा कर लौट रही हैं,कुछ कह रहे कि तैंहरवीं में पनीर बन रहा या मट्ठा आलू? कुछ मोबाइल से फोटो खिंचवाने में लगे हैं,अब गहरी यायावरी उतरने लगी है कुछ साधक शवों में खोपड़ियां खोज रहें हैं,

शायद सिद्धि विधान कुछ करते होगें। कुछ गरीब उन्हीं शवों की लकड़ियां जलाकर ताप रहे हैं और कुछ छिपा कर लकड़ियां घरों को ले जा रहे हैं कि दो दिन चूल्हें के लिए ठिकाना हो जाये। हाय! रे गरीबी। आज मैं समझा कि लोगों की मदद करना अपरिहार्य और अत्याज्य धर्म कर्म है।

काश! मैं अपने धन से इन लोगों की मदद कर पाता? सोचते हुए सुबह हो चुकी थी पर मैं स्थूल शरीरविहीन, अनेकों अधजले शरीरों को हर तरफ़ पड़े देख रहा हूँ। चारों तरफ़ अजीब दुर्गंध राख-ही-राख है,कुछ अधजली लकड़ियों और गंदगी का अम्बार है। हे! राम सत्यवादी राजा हरिश्चंद्र ऐसी जगह पर कैसे रहे होगें? आज महसूस कर रहा हूं। काश! मैं जिंदा होता तो इस स्थान के लिए कुछ करता। हे! सर्वशक्तिमान यदि आप मुझे सुन पा रहे हैं तो किसी महान व्यक्तित्व के मन में ऐसी प्रेरणा कर दो जो इन अंत्येष्टि स्थलों को भी अपने हृदय से लगाकर इसकी सेवा कर सके, कायाकल्प कर सके।तभी जोरदार बिजली कड़की और एक स्वरनाद हुआ, ''तथास्तु।'' अब यह किसे पता था कि भगवान यह प्रेरणा हमारे औरैया जिले के जनप्रिय जनसेवक, महान पुण्यात्मा दिव्य शख्सियत श्री आनंद नाथ गुप्ता, एडवोकेट जी के अंतःकरण में करेगें। तो आइये! आपको शब्दों द्वारा रू-ब-रू करवातें हैं, उसी जनसेवक, साधक से जिसकी सुकर्मों की सुकीर्ति से आज देश - दुनिया आलौकिक हो रही है।

आइये! आज हम आपको मिलवाने जा रहे हैं औरैया जिले के महान समाजसेवी साधकों से-

(1)-आपका और आपकी सोसाइटी का क्या नाम है?

मेरा नाम है डॉ. आनंद नाथ गुप्ता, एडवोकेट,(संस्थापक विचित्र पहल)

और मेरा नाम है लक्ष्मी गुप्ता विश्नोई, (अध्यक्ष महिला तुलसी शाखा)।

हमारी समिति का पूरा नाम है, '' एक विचित्र पहल सेवा समिति'' ।

(2)- आखिर! विचित्र पहल नाम ही क्यों रखा?आप लोग कौन सा विचित्र कार्य करते हैं?

हमारी समिति को सुचारू रूप से चलते हुए पूरे 30 वर्ष बीत चुके हैं और तब से लेकर आज तक ईश्वर की कृपा और सभी के सहयोग से यहां विचित्र कार्य होते रहे हैं जिसमें सबसे ज्यादा चर्चित अंत्येष्टि स्थलों की स्वच्छता अभियान रहा है जिसमें समिति के पुरूषों और महिलाओं ने मन से भय और भ्रम निकालकर उस भयावह कहे जाने वाले मरघट /श्मशान की स्वच्छता और कायाकल्प का जिम्मा कहें या बीड़ा हमने उठाया हुआ है। मेरा संकल्प है कि मैं देश-दुनिया से अंत्येष्टि स्थलों का भय मिटा देना चाहता हूँ।

(3)- ये मरघट /श्मशान की सफाई करने का विचार आपको कैसे आया?

ये तो परमात्मा की प्रेरणा हुई कि एक बार हम किसी की अंत्येष्टि में गये हुए थे तो हमने सोचा कि यह सत्य का स्थल है क्यों न यहां भी स्वच्छता रखी जाये बस फिर हम संकल्पबद्ध होकर जुट गये फिर धीरे-धीरे लोग जुड़ते गये कांरवा बनता गया, मैं मेरे समस्त सहयोगियों का हृदय से आभारी हूं।

(4)-आपके संगठन में कितनी महिलाएं जुड़ी हैं?

संख्या क्या बतायें, यह मान लीजिये कि जिले कि अधिकतर सभी महिलाएं हमारे संगठन की पारिवारिक सदस्य ही हैं और आज यह संगठन विशाल पीपल का वृक्ष बन चुका है जिसकी एक शाखा हमारी तुलसी शाखा है।

(5)-आपकी संस्था ने प्रमुख पांच कार्य कौन से किये हैं?

1- अंत्येष्टि स्थलों की साफ-सफाई जिसमें अभी तक 130 वें चरण का सफाई अभियान सफलतापूर्वक चलाया जा चुका है। इसमें जहां पर शव दहन के बाद जब कई अधजले क्षतिग्रस्त शवभाग, हम लोग(पुरूष-महिला टोली)पहुंचकर उसे बटौरकर पुनःदाह क्रिया करते हैं, जिससे इस स्थान की स्वच्छता सुचारू रूप से बनी रहे। और हाल ही मैं हमने अंत्येष्टि स्थलों पर सोलर लाइट लगवाकर उस सत्य स्थल को रोशन किया है, हमने महसूस किया था कि दूर गांवों से लोग अपने परिवारजनों आदि का अंतिम संस्कार कर जब घरों को लौटते हैं तब तक काफी शाम हो चुकी होती है और सर्दियों में तो अंधेरा ही हो जाया करता है, इसलिए जनहित में हमने यह सुविधा करवायी है। अब आगें कि हमारी यह योजना है कि अंत्येष्टि स्थलों पर एक बरामदें का निर्माण करवायें जो इज़्ज़त घर की तरह मर्यादित हो जहां हमारी मातायें-बहनें जब यहां पहुंचतीं हैं तो उन्हें

यहां खुले में स्नान न करना पड़े।

2- यमुना नदी की स्वच्छता अभियान जिसमें हमने विगत वर्षों से लगातार इसे क्रियान्वित किया हुआ है और वर्षों से टनों कचड़ा निकाल कर माता यमुना को स्वच्छ रखने की प्रतिज्ञा ले रखी है।

3- हमने हमारे मां यमुना में बह कर आयी हुई बड़ी दुर्लभ प्राचीन देवी प्रतिभा की प्राण प्रतिष्ठा करके उसे सुव्यवस्थित रूप से मंदिर में स्थापित किया है। इस संदेश के साथ कि हमारी सनातन धरोहर को संरक्षित करके हम हमारी सांस्कृतिक विरासत को संजोए रखने की भी नैतिक जिम्मेदारी का निर्वहन करें।

4-हमने कोरोना जैसे कठिन समय में अंत्येष्टि स्थलों पर शवों को लाने ले जाने के लिए वर्फ सिक्योर/डीप फ्रीजर शव यात्रा वाहन लगाकर शवों को पूरे रीति-रिवाज के साथ उन सबकी अंत्येष्टि करवायी जिनके पास कोई खड़े होने तक को तैयार नहीं था। हमने इस कोविड दौर में अनेकों जरूरतमंदों इंसानों ही नहीं जीव-जंतुओं तक को विभिन्न साधनों से जितनी मदद हो सकी करने का प्रयास किया।

5- जल संरक्षण, पर्यावरण संरक्षण, ब्रिच/चौराहों के पास प्याऊ अभियान और गरीब बेटियों की शादियां आदि के लिए हम वर्तमान में जितना हो सकता है पूरे मनोयोग से कार्य कर रहे हैं क्योंकि जल और पर्यावरण हमारे जीवन की रीढ़ है।

(6)आपकी जिलाधिकारी और भारत सरकार से क्या मांग है?

हमारी जिलाधिकारी और भारत सरकार से विनम्र प्रार्थना है कि जिस तरह से लगभग हर दिन अंत्येष्टि स्थलों पर शव जलते हैं उससे एक बहुत बड़ी संख्या में लकड़ी का दहन होता है पर उसके एवज़ में उतने बृक्ष नहीं लग पाते और लग भी जायें तो सब बृक्ष में कुछ ही बड़े हो पाते हैं जिन्हें जंगली जीव नष्ट-भ्रष्ट कर देते हैं।एक आंकड़े के अनुसार एक अंत्येष्टि में लगभग 2 कुंतल लकड़ी का उपयोग किया जाता है, इस प्रकार एक ही स्थान पर केवल एक ही दिन में 10 अंत्येष्टियों में लगभग 20 कुंतल लकड़ी का उपयोग होता है, पर्यावरण संरक्षण के अंतर्गत विद्युत शवदाह गृह की स्थापना होने पर प्रतिदिन 20 कुंतल लकड़ी का उपयोग बचाया जा सकता है, अब आप पूरे देश का आंकड़ा विचार सकते हैं। इसी परिप्रेक्ष्य में हमारी मांग है कि पूरे भारत के हर जिले में इलेक्ट्रॉनिक शवदाह ग्रह बनने और क्रियान्वित होने चाहिये। फिलहाल जिले औरैया में शुरू करवा दीजिएगा। दूसरा यह कि यमुना मैया के हम सब सेवादार यही मांग करते हैं कि यमुना मैया की भी स्वच्छता पर सरकारें ध्यान दें और उनमें गिरने वाले गंदे नाले व अपशिष्ट पदार्थो तथा यमुना की रेत को भी माफियाओं द्वारा कई जगह गड्ढे करना और उनमें मवेशियों के गिर कर असमय मर जाने की असहनीय घटनाओं पर सरकारें अपने उचित प्रबंधन द्वारा रोकने की कृपा करें।

(7)-इस विश्व महिला दिवस पर आप उन दादी बाबा को क्या कहना चाहेगीं जिनको सिर्फ़ नाती /पोते की ही चाह होती है?

मैं लक्ष्मी गुप्ता स्पष्ट शब्दों में यही कहूंगी कि बेटी ही नहीं होगी तो पोते की कल्पना कैसे हो सकती है। मैं खुद एक बेटी हूँ और मेरी भी दो बेटियाँ हैं और उस दौर में मुझे भी कहा गया था कि एक बेटा तो होना ही चाहिए पर मैनें मेरी आत्मा की आवाज़ सुनी और दोनो बेटियों को पढ़ा-लिखा कर काबिल बनाया जिसमें एक की शादी हो चुकी है और दूसरी रूड़की में पीचडी कर रही है। मुझे मेरी दोनों बेटियों पर गर्व है।

(8)-लक्ष्मी गुप्ता जी आपको आपके सास - ससुर और पति का कितना सहयोग मिला?

मुझे मेरे पूरे परिवार का खूब सहयोग मिला तभी तो मैं, ''एक विचित्र पहल'' समिति में अपने बड़े भाई/ संस्थापक /अध्यक्ष आदरणीय आनंद नाथ गुप्ता, एडवोकेट जी और समिति के सभी भाई-बहनों के साथ पूर्ण मुखरता से खुशी-खुशी समाजिक कार्य कर पा रही हूं।

(9)- आजकल समाज में सबसे बड़ी समस्या है दहेज़ ? इसका क्या समाधान होना चाहिए?

मैं तो साफ कहता हूँ कि दहेज़ लेना और देना कड़ा अपराध घोषित हो ताकि हमारी बच्चियों का जीवन सिक्योर हो सके और हमारा समाज इन चीजों से ऊपर उठकर मानवीय कार्य कर सकें। हमें उस परमात्मा ने किसी विशेष कार्य हेतु भेजा है और हम यहां दहेज़ के नाम पर बेटे - बेटियों को प्रताड़ित कर रहे हैं। समय आ गया है कि हमें सभी प्रकार के

रूढ़िवाद को खत्म कर इंसान बनकर सोचना होगा, जीना होगा वरना जिस घर में बच्चे-बच्चियां कचहरी की चौखट पर जायेगें तो समझ लो कि समाज किस ओर जायेगा।

(10)-लक्ष्मी गुप्ता जी विश्व महिला दिवस पर देश की बेटियों को आप क्या कहना चाहेगीं?

मैं यही कहूंगी कि हे! मेरे देश की बेटियों तुम खूब पढ़ो-लिखो और कभी किसी के आश्रित मत रहो। कामयाब बनो और जो लड़का दहेज़ मांगे उससे तुम शादी ही मत करो। बेटियों का मन करता है उनको सरकारी नौकरी वाला ही मिले और बेटों को लगता है कि सुन्दर, सुशील के साथ कार और दहेज़ भी मिले, अतैव दोनों को अपना लालच त्यागना होगा। क्योंकि बहू कोई वस्तु नहीं होती उसमें भी जान होती है वह भी इंसान है और पति भी एटीएम मशीन नहीं है कि हर रोज वो आपको शोपिंग कराये। दोनों तरफ़ से जब वैचारिक सामंजस्य होगा तभी समाज में समरसता आयेगी। तो बेटियों शुरूआत तुमसे ही हो, पाप के सामने मत झुको अपने हक के लिए जरूर लड़ो।

(11)- आपको औरैया के बेहतरीन डीएम आदरणीय सुनील कुमार वर्मा जी ने 'औरैया रत्न' से सम्मानित किया है। डीएम सर के बारे में कुछ कहना चाहेगीं?

मैं सौभाग्यशाली हूँ कि ''एक विचित्र पहल सेवा समिति'' को जिलाधिकारी महोदय ने औरैया रत्न से नवाज़ा, इस योग्य समझा। आगें यही कहूंगा कि औरैया के लोग सचमुच सौभाग्यशाली हैं कि उनको इतना जिंदादिल, कर्मठ और जुझारू और कर्तव्यपरायण, बुराई के प्रति कठोर और अच्छाई के प्रति करूण हृदय व्यक्तित्व मिला है जिन्होंने कोरोना काल में जनपद में किसी भी तरह की दुःखदायी परिस्थिति नही पनपने दी जहां अन्य जिलों में ऑक्सीजन की कमी थी वहीं औरैया में न ऑक्सीजन की कमी थी और न ही बैड की और तो और डीएम जी ने अपनी मासूम सी बच्ची का जन्मदिन फाईव स्टार होटल में न मना कर जिले औरैया के वृद्धाश्रम में मनाते हैं और हाल ही में उन्होंने अपने ससुर जी कि भी पुण्यतिथि जिले के वृद्धाश्रम में सभी बुजुर्गों को भोजन खिलाकर उनके आशीर्वाद लेकर सम्पन्न की। सचमुच डीएम सुनील कुमार वर्मा जी को जनपद औरैया के वासी कभी भी भूल नहीं सकेगें।

(12) रूस और यूक्रेन युद्ध पर आप दोनों की क्या राय है?

मैं लक्ष्मी गुप्ता यही कहूंगी कि युद्ध तो दो देशों के प्रमुखों की आकाश चीरती महत्वाकांक्षा के फलस्वरूप घटित हो रहा है पर मर तो रही है बेचारी जनता।

मैं आनंद नाथ गुप्ता, एडवोकेट यही कहूंगा कि इस युद्ध में जनता के ही तो टेक्स का पैसा बर्बाद हो रहा है। यह सब बाहरी देश खुद को मानवता के नाम पर अंतरराष्ट्रीय मंचों से ज्ञान बांटते हैं पर आज सबसे ज्यादा अमानवीय कार्यों को अंजाम देने में अग्रणी भूमिका निभा रहे हैं। ये दोनों ही देश अपनी-अपनी जनता के आसुँओं के दोषी हैं और इतिहास इन्हें कभी क्षमा नहीं करेगा।

विनम्र अपील - मैं आकांक्षा सक्सेना, न्यूज ऐडीटर सच की दस्तक राष्ट्रीय मासिक पत्रिका, वाराणसी से अपने महान भारतवर्ष के राष्ट्रपति महामहिम रामनाथ कोविंद जी, प्रधानमंत्री मोदी जी और उत्तर प्रदेश के यशस्वी मुख्यमंत्री आ. योगी जी से विनम्र अपील करतीं हूँ कि देश के अद्भुद, अकल्पनीय, महान कार्यं करने वाली निष्पक्ष समिति, ''एक विचित्र पहल सेवा समिति, औरैया को उसके जमीनी स्तर पर किये गये लोककल्याणकारी कार्यों के लिए अपने आशीर्वादतुल्य पद्मश्री और भारत रत्न जैसे गौरवशाली सम्मान प्रदान करते हुए अच्छाई को पुष्पित और पल्लवित होने की राष्ट्रीय परम्परा को जीवंत रखने का प्रयास जारी रखते हुये इन सामाजिक साधकों का उत्साहवर्धन यथोचित् सम्मान बनाये रखने की कृपा करें। धन्यवाद।

यथार्थ यही है कि समाजसेवा कोई ऑटोमैटिक प्रक्रिया नहीं है। इसके लिये जीवन लगाना पड़ता है। यह एक साधना है और 'एक विचित्र पहल सेवा समिति' के सभी सदस्यगण महान साधक हैं तो बनिए! एक सफल साधक और करते रहिये अच्छे कार्य। जय हिंद वंदेमातरम्

■■

13 अप्रैल विशेष : जलियांवाला बाग नरसंहार के 103 साल

भारत के इतिहास में 13 अप्रैल एक दर्दनाक काली तारीख है। 103 साल पहले पंजाब में अमृतसर में जालियांवाला बाग हत्याकांड हुआ था। इस हत्याकांड में सैकड़ों-हजारों लोगों की मौत हुई। अमृतसर के डिप्टी कमिश्नर कार्यालय में 484 शहीदों की सूची है, जबकि जलियांवाला बाग में कुल 388 शहीदों की सूची है। अनाधिकारिक आंकड़ों के अनुसार 1000 से अधिक लोग मारे गए और 2000 से अधिक घायल हुए। इस घटना ने भारतीय स्वतंत्रता संग्राम पर आग में घी कपूर का काम किया। कहा जाता है कि इसी घटना के बाद से भारत में ब्रिटिश शासन के अंत की जोरदार शुरुआत हुई।

13 अप्रैल 1919 में जलियांवाला बाग में अंग्रेजों ने निहत्थे भारतीयों के साथ खूनी होली खेली थी। रौलेट एक्ट का विरोध करने के लिए यहां एक सभा हो रही थी जिसमें क्रूर जनरल डायर नाम के एक अंग्रेज ऑफिसर ने उस सभा में उपस्थित भीड़ पर गोलियां चलवा दीं। उसने खुद कहा कि 1650 राउंड फायरिंग की गईं।

कुछ ही देर में पूरे बाग में लाशें बिछ

गईं। जान बचाने के लिए लोग इधर-उधर भागने लगे। भगदड़ में ही कई लोगों की मौत हुई। एक के ऊपर एक कई लाशें थीं। कुछ लोग जान बचाने के लिए वहां मौजूद एकमात्र कुएं में कूद गए। थोड़ी ही देर में कुआं भी लाशों से पट गया। करीब 10 मिनट तक फायरिंग होती रही और इस दौरान कुल 1650 राउंड गोलियां चलाई गईं। कुए से ही 120 शव मिले। ऐतिहासिक स्वर्ण मंदिर के नजदीक जलियांवाला बाग लोग शांतिपूर्ण सभा के लिए जमा हुए थे। अतिक्रूर अंग्रेजी अफसरों ने उन पर ही अंधाधुंध गोलियां बरसाईं। गोलीबारी से घबराई बहुत सी औरतें अपने बच्चों को लेकर जान बचाने के लिए कुएं में कूद गईं थीं, यह सब झेला है हमारे पूर्वजों ने।

इस हत्याकांड के समय जलियांवाला बाग में मौजूद रहे उधम सिंह ने 21 साल बाद 1940 में जनरल डायर को लंदन में गोली मारकर बदला लिया। जनरल डायर को मारने के लिए वे लंदन गए। इसके लिए उन्हें लंदन कोर्ट ने फांसी की सजा सुनाई थी। 31 जुलाई 1940 को लंदन की जेल में उन्हें फांसी दी गई। इस हत्याकांड ने 12 साल के भगत सिंह की सोच पर गहरा प्रभाव डाला था। इस घटना के बाद आजादी हासिल करने की चाहत, शोला बनकर अंग्रेजों पर टूट पड़ी। फिर यह चाह न केवल पंजाब बल्कि पूरे देश के बच्चों के सिर चढ़ कर बोलने लगी। उस दौर के हजारों भारतीयों ने जलियांवाला बाग की मिट्टी को माथे से लगाकर देश को आजाद कराने की शपथ ली थी, और उनका सपना साकार भी हुआ। आज हम लोग इन्हीं क्रांतिकारियों के ऋणि हैं। यह आजादी यूँहि नहीं मिली, लाखों भारतियों की लाशों पर सिसक कर यह आजादी मिली है पर देश के गद्दारों अलग ही राग अलापते हैं। वंदेमातरम्

■■

ब्रह्मीभूत लता मंगेशकर जी

गीर्वाण की दिव्यांगना
लय की भुवनमोहिनी
रव की राजमहिषी
चली छोड़ सब लोकाचार
रहने को पुण्यस्थान
अनुरक्ति से रही रिक्त
प्रेम जीवन वांछित तृप्त
नादप्रिय प्रगल्भ धनेश्वरी
वंटन रही स्वर कलनाद
जग को दिया अमर विस्तार
हे दीनानाथ सुता
हे शेवन्ती लतिका
पद्य शंख तुमको नमन
पुनःपुन तुमको नमन।

■■

अवनीत कौर दीपाली
असम हैड

हे! वर्दी

हे! वर्दी, पलकों पर अपने बैठा लूं तुझे
तुम्हीं पर दिल-ओ-जान वारूं प्रिये!
आपको पा के, खोने से डरता हूं मैं
देश के लिए हों मेरी श्वासें समर्पित
गुम हो ना जाए आंखों से शहीदों की यादें
मेरे देश पर न आये कोई संकट-बाधा
यहीं सोच कर के रातों में सोने से डरता हूं।
तुम्हीं मेरे जीवन की सुबह बन गई
मेरे दिल में तुम्हीं ही रच-बस गयी
अब तो लगता नही तेरे बिन दिल कहीं,
तेरा वैभव अमर रहे, तिरंग सदा विजयी रहे
बस यही शपथ मेरे जीने की वजह बन गई !
आजा सीने में अपने छुपा लूं तुझे
दिल के दर्पण का फोटो बना लूं तुझे
तुमसे रिश्ता है जन्मों - जन्म का मेरा
आजा पलकों पर अपने बैठा लूं तुझे !
हे! वर्दी तुझे सैल्यूट कर पुकारू तुझे
दुश्मनों का काल बन ललकारूं उन्हें
हिंद की सेना जिंदाबाद नारे लगाऊँ मैं।

आलोक आरा
पटना

सच की दस्तक के 5 वर्ष पूर्ण होने की हार्दिक शुभकामना

राकेश शर्मा
जिलाध्यक्ष, श्रमजीवी पत्रकार एसोसिएशन
अखिल भारतीय उद्योग व्यापार मंडल
जिला चंदौली

फिर बनी योगी सरकार

योगी आदित्यनाथ ने इकाना स्टेडियम में आज दोबारा उत्तर प्रदेश के मुख्यमंत्री के तौर पर ली। शपथ ग्रहण समारोह में प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी सहित तमाम बड़े नेता मौजूद रहे। सीएम और डिप्टी सीएम सहित योगी कैबिनेट में 53 दिग्गज हैं।उत्तर प्रदेश की सियासत के कई मिथक तोड़ते हुए योगी आदित्यनाथ ने लगातार दूसरी बार उत्तर प्रदेश की कमान संभाल ली है।गोरक्षपीठाधीश्वर महंत योगी आदित्यनाथ ने उत्तर प्रदेश का राजनीतिक इतिहास बदल दिया है। यूपी में 35 साल बाद किसी पार्टी को लगातार दूसरी बार बहुमत मिला है। राज्यपाल आनंदीबेन पटेल ने योगी आदित्यनाथ को मुख्यमंत्री पद की शपथ दिलाई, जबकि केशव प्रसाद मौर्य और ब्रजेश पाठक ने डिप्टी सीएम पद की शपथ ली। इसके अलावा ओ डिप्टी सीएम, 16 कैबिनेट मंत्री, 14 राज्य मंत्री (स्वतंत्र प्रभार) और 20 राज्य मंत्री बनाए गए हैं। निवर्तमान डिप्टी सीएम दिनेश शर्मा, श्रीकांत शर्मा, सिद्धार्थनाथ सिंह, मुकुट बिहारी वर्मा को मंत्रिमंडल में जगह नहीं दी गई है। वहीं इस बार मोहसिन रजा की छुट्टी की गई है, उनकी जगह दानिश आजाद, योगी मंत्रिमंडल का मुस्लिम चेहरा बनाए गए हैं. बलिया जिले की बांसडीह विधानसभा स्थित अपायल गांव के रहने वाले दानिश आजाद उत्तर प्रदेश में भारतीय जनता पार्टी अल्पसंख्यक मोर्चा के प्रदेश महामंत्री हैं. आजाद यूपी सरकार की उर्दू

भाषा कमेटी के सदस्य भी रह चुके हैं. लखनऊ यूनिवर्सिटी में पढ़े दानिश आजाद अंसारी छात्र जीवन में ही अखिल भारतीय विद्यार्थी परिषद से जुड़ गए थे। बता दें कि विधानसभा चुनाव 2022 के दौरान योगी आदित्यनाथ और अखिलेश यादव ने एक दूसरे पर जोरदार वार-पलटवार किया था। यूपी विधानसभा में आज अखिलेश-योगी की मुलाकात हुई। यहां अखिलेश यादव और योगी ने एक दूसरे से हाथ मिलाया जिसके बाद मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ ने अखिलेश यादव के कंधे पर हाथ रखा। इस दौरान दोनों मुस्कुराते हुए दिखे. विधायक पद की शपथ लेने के बाद अखिलेश यादव ने डिप्टी सीएम केशव मौर्य से भी हाथ मिलाया। बता दें कि अखिलेश करहल विधानसभा सीट से विधानसभा चुनाव जीते हैं। इससे पहले वह आजमगढ़ से सांसद थे। विधायक बने रहने के लिए उन्होंने सांसद के पद से इस्तीफा दे दिया था। यूपी विधानसभा चुनाव में योगी आदित्यनाथ के नेतृत्व में बीजेपी ने लगातार दूसरी बार सरकार बनाई है। इस चुनाव में बीजेपी को 255 सीटें, एसपी को 111 सीटें मिली थी। चुनाव परिणाम से पहले अखिलेश ने ईवीएम से लेकर सत्ता पक्ष पर कई आरोप लगाए थे।इस खुशी की बात के बीच में यह भी बुरी खबर आयी जब मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ ने कुशीनगर में 20 मार्च की घटना के बाद रविवार रात बाबर की मौत पर गहरा दुख जताया। सीएम योगी आदित्यनाथ ने कहा कि महात्मा बुद्ध का महापरिनिर्वाण स्थली कुशीनगर में बाबर की पिटाई का प्रकरण बेहद ही निंदनीय है। बाबर की पिटाई से मौत पर गहरा शोक व्यक्त करने के साथ मुख्यमंत्री ने शोक संतप्त परिजनों के प्रति संवेदना भी जताई। उन्होंने कुशीनगर के एसपी को इस प्रकरण की तत्काल तथा निष्पक्ष जांच के लिए निर्देश दिया है। इसके साथ ही शासन तथा पुलिस विभाग के आला अधिकारियों को जांच पर नजर रखने का निर्देश दिया है। बाबर कुशीनगर के कठघरही गांव के निवासी थे।

■■

सच की दस्तक के 5 वर्ष पूर्ण होने की हार्दिक शुभकामना

प्रभुनाथ जायसवाल

भाजपा कार्यकर्ता,

दीनदयालनगर

अद्भुत है रुहेलखंड का प्राचीन कला-वैभव

अतुल मिश्र
पुरातत्वविद

प्राचीन काल में हमारा रुहेलखंड 'उत्तर पंचाल' के नाम से विख्यात था। आधुनिक बरेली, मुरादाबाद, बदायूं, शाहजहांपुर और बिजनौर ज़िलों की सीमाओं तक इसका विस्तार था। वैदिक काल में यह 'पंचाल' के नाम से उल्लिखित मिलता है (पंच अलम् इति पंचालम्)। महाभारत-काल में गुरू द्रोणाचार्य ने द्रोपदी के पिता द्रुपद से आधा राज्य छीनकर अपने अलग राज्य की स्थापना की और इसकी राजधानी बरेली के निकट अहिच्छत्रा को बनाया। यह प्राचीन नगरी आज भी आंवला तहसील में रामनगर गांव के पास टीलों के रूप में अपने प्राचीन वैभव की मूक साक्षी बनती दिखाई देती है। यहां बिखरे पड़े ध्वंसावशेष महाभारत काल से लेकर मुस्लिम आक्रांताओं के भारत-आगमन से पहले तक के उपलब्ध हुए हैं, जो देश के विभिन्न संग्रहालयों में सुरक्षित हैं।

रुहेलखंड के विभिन्न प्राचीन ध्वंसावशेषों से अब तक जो पुरावशेष मिले हैं, वे ईसा पूर्व 2000 से लेकर मुगलकाल तक के हैं और पुराविदों द्वारा अपनी कला से अलग ही पहचान लिये जाते हैं। ऐसे सैकड़ों पुरावशेष पुराविद सुरेंद्र मोहन मिश्र के निजी संग्रह में हैं और उनके देहावसान के बाद अब विभिन्न संग्रहालयों में उनके नाम से प्रदर्शित हैं। इसके अलावा राष्ट्रीय संग्रहालय, इलाहाबाद, लखनऊ, मथुरा और कलकत्ता के संग्रहालयों में भी इस क्षेत्र का प्राचीन कला-वैभव प्रदर्शित है। मुरादाबाद, बरेली और बदायूं क्षेत्र के क़रीब 150 प्राचीन ध्वंसावशेष श्री मिश्र ने अपनी 50 वर्षों की अनवरत साधना के दौरान हमारी आने वाली पीढ़ियों को

खोज निकाले थे। उनके इस योगदान को कभी नहीं भुलाया जा सकता।

इस क्षेत्र से अब तक प्राप्त प्राचीनतम पुरावशेष ईसा पूर्व लगभग 2000 की वह मृण्मूर्ति है, जो किसी नारी की लगती है। यह दुर्लभ मृण्मूर्ति चंदौसी के निकट राजघाट की गंगा नदी के किनारे से मिली है। आधुनिक पुराविद इसे परग्रही (एलियन) नारी की मूर्ति मानते हैं, क्योंकि इसकी आंखों की बनावट विचित्र रूप से चुटकी की सहायता से निर्मित है। इस पर की गई लाल ओपदार पॉलिश इसे और भी महत्वपूर्ण बनाती है। इसकी अपेक्षा बाद की मिट्टी की प्राचीन कलाकृतियों में मिली पॉलिश भी इतनी बेहतरीन नहीं है। नारी की यह दुर्लभ मृण्मूर्ति अपनी बनावट के आधार पर किसी भी तरह पुरातत्वविदों द्वारा इस क्षेत्र से बड़ी संख्या में मिलीं मातृदेवियों से मिलती-जुलती नहीं मानी गई है। नवीनतम शोधों के आधार पर दक्षिण अमेरिका के बहुचर्चित पुराविद प्रवीण मोहन ने ऐसे तमाम प्राचीन कलावशेषों को उपलब्ध साक्ष्यों के आधार पर परग्रहियों के अंकन से जोड़ने का दावा किया है।

चंदौसी-क्षेत्र की अरिल और सोत नदियों के निकट से अनेक ऐसे ताम्र पुरावशेष मिले हैं, जिन्हें पुरातत्ववेत्ताओं ने ईसा पूर्व 1000 से 700 ईस्वी तक का माना है। इनमें मानवाकृतियां, भाले के फ़लक, तीर, कुल्हाड़ियां, तलवारें, चूड़ियां और कड़े शामिल हैं। इन पुरावशेषों के आधार पर गंगा और रामगंगा के बीच के इस भूभाग के बारे में यह स्पष्ट रूप से कहा जा सकता है कि जब विश्व की बहुत सारी सभ्यतायें जन्म भी नहीं ले पाईं थीं, तब यह भूभाग अपनी उन्नति की ओर अग्रसर था। इन पुरावशेषों की बनावट और परिष्कृत धातु के अध्ययन से यह कहा जा सकता है कि तत्कालीन क्षेत्रवासी तब तकनीकी रूप से समृद्धि की ओर बढ़ रहे थे। वैदिक काल से ही इस क्षेत्र को 'आर्यावर्त' कहा जाता रहा है। इसके प्रमाण यहां से उपलब्ध वे मिट्टी के बर्तन हैं, जिन्हें सौरऊर्जा से पकाया गया है। इन पर आग द्वारा पकावट के कोई चिन्ह नहीं मिलते। सिलैटी मिट्टी के इन बर्तनों को पुराविदों ने राजा जनमेजय द्वारा किये गये उस नाग-य़ज्ञ से जोड़ा गया है, जिसमें सूर्य को निमंत्रित किया गया था। कथा बताती है कि तब सूर्य अपनी धुरी से बहुत नीचे आ गया था, जिसके फ़लस्वरूप कुम्हारों के बनाये बर्तन अपने आप पक गये थे। लगभग सभी पुरातत्ववेत्ता इन साक्ष्यों की पुष्टि करते हैं। मिट्टी के इन बर्तनों के टुकड़ों को अगर हाथ में लेकर बजाया जाये, तो ये धातु की तरह आवाज़ भी करते हैं, जो अलग शोध का विषय है।

रुहेलखंड के सर्वथा अज्ञात ध्वंसावशेषों की खोजबीन के बाद एकात्म पुरान्वेषी सुरेंद्र मोहन मिश्र इस निष्कर्ष पर पहुंचे थे कि मौर्यकाल से पूर्व भी यह भूभाग अपनी कला और वैदिक संपदा के लिए प्रख्यात था। यहां से प्राप्त मातृ देवियों की मृण्मूर्तियां भी इस बात की ओर इशारा करती हैं। इन मूर्तियों में केश-विन्यास के अलावा विशेष प्रकार के आभूषण बने मिलते हैं। तत्कालीन मृण्मूर्तिकारों ने इनमें मातृत्व प्रदर्शित करने की दृष्टि से उनके कूल्हों को विशेष रूप से चौड़ा बनाया हुआ है। ईसापूर्व चौथी शती से लेकर पहली शती ईसापूर्व की मौर्य और शुंगकालीन मातृदेवियां भी लगभग मिलती-जुलती लगती हैं, मगर चौकोरनेत्री बनावट में अंतर की वजह से वे अलग से ही पहचानी जा सकती हैं। शुंगकाल में कला अपना रूप बदलती है और मिट्टी की मूर्तियों के निर्माण में सांचों का प्रयोग शुरू हो जाता है। बाद में ग्रीक लोगों ने भी इसी तकनीक पर अपनी मूर्तियों का निर्माण किया।

'कामसूत्र' ग्रंथ के रचयिता वात्स्यायन ने अपने ग्रंथ के प्रारंभ में ही लिखा है कि उन्होंने इस ग्रंथ की रचना उत्तर पंचाल निवासी वाभ्रव्य ऋषि के एक ग्रंथ के आधार पर ही की है। कुषाण और गुप्तकाल (पहली शती ईस्वी से सातवीं शती ईस्वी तक) में उत्तर पंचाल की कला अपने चरमोत्कर्ष पर पहुंच गयी थी और विभिन्न पौराणिक और जातक कथाओं को जीवित रखने के लिए उनका अंकन भी मूर्तियों के द्वारा तेज़ी से किया जाने लगा। राष्ट्रीय संग्रहालय, नई दिल्ली में प्रदर्शित गंगा-यमुना की गुप्तकालीन विशाल मृण्मूर्तियां भी अहिच्छत्रा की खुदाई से मिली हैं। इसी के साथ शंकर और पार्वती की मृण्मूर्तियां हैं, जो अपनी जीवंत कला के लिए विश्वविख्यात हैं। मौर्यकालीन कौटिल्य के ग्रंथ 'अर्थशास्त्र' में कौटिल्य ने स्पष्ट रूप से यह लिखा है कि अहिच्छत्रा अपने मणि-मुक्ता व्यवसाय के लिए विश्वविख्यात था। दक्षिण भारत से बिना तराशे काले पत्थर यहां तराशने के लिए भेजे जाते थे और तराशने के बाद

उन्हें पॉलिश करके निर्यात किया जाता था।

रुहेलखंड के प्राचीन ध्वंसावशेषों से प्रागमौर्य, मौर्य, शुंग, कुषाण, गुप्त, मध्य और मुगल काल तक के सिक्के भी बड़ी मात्रा में मिलते हैं। इनमें ईसापूर्व के चांदी के पंचमार्क सिक्के भी बहुत महत्त्वपूर्ण हैं। उत्तर पंचाल के समुद्रगुप्त कालीन स्वतंत्र राजा अच्युत के सिक्के इस राजा के पराक्रम के मूक गवाह हैं। इन तमाम उपलब्ध साक्ष्यों के आधार पर यह कहा जा सकता है कि प्राचीनकाल में यह पवित्र भूमि वैदिक ज्ञान, कला-कौशल और व्यापार में देश के अन्य राज्यों से अधिक उन्नत थी और इसका एक मुख्य कारण गंगा-यमुना के दोआब और उत्तर दिशा में हिमालय की जीवनदायी जलवायु का होना भी था।

आज का बच्चा क्यों ना सच्चा

देखते देखते धरा पर बिछा हरा गलीचा,
नग्न हो रहा वो जिसे माली ने प्यार से सींचा।
अब ना रहा गया मुझ से असहाय ,
मूक दर्शक बन, देख ना पायी जीव पर अन्याय।
नीचे जा किशोर को बुला पास बिठाया,
'क्या गलत नहीं लगता जो तुमने कहर ढाया?'
कहता है मुख से, ' पता नहीं ?'
खोई हुई नज़रे पर मिला नहीं पाया।
समझा कर चली आयी पर आश्चर्य हुआ ,
समझदार था वह पर क्यों नहीं स्वीकार हुआ।
'क्यों आज का बच्चा सच बोलने से डरता ?,'
'कैसे हैं संस्कार जो बाल मन सहिष्णुता से न भरता?'

बालकनी से देख रही थी मैं ,
तोड़ नर्म पत्तियां फेंक रहा था वो।
सोचा है तो बच्चा संभल जायेगा,
जानवर थोड़े ही है जो इन्हें खायेगा।
एक एक करके तोड़ी कुछ दस पत्तियां,
बेरहमी से जैसे हों कागज की बत्तियां।
कुछ असहज महसूस हो रहा था ,
ऐसा लग रहा था जैसे पौधा रो रहा था।

मृदुला सिंह देऑल
देहरादून

शब्द मीमांसा

शब्द

डाक्टर छगन लाल गर्ग
'विज्ञ', आबूरोड

शब्द एक संकेत है, एक चिन्ह है, एक अवधारणा है, एक चिर स्थिति का खाका है , जो हमारी संकल्पनाओं के तार से बँधा है, यह एक आंतरिक मनोभावों ,वृत्तियों, व्यवहारों और व्यापारों का सेतु है जिस पर मानव जीवन रूपी रथ चलता है। इसके अभाव मे मानव और पशुता के बीच भेद सूक्ष्म स्तर पर नहीं किया जा सकता! शब्द भाव भंडार की विस्तृत मनोदशा का भौतिक सत्य है, व्यक्ति की भीतरी चेतना से जुड़ी कल्पना और अनुभूति का सत्यान्वेषण रूप है, जो मौलिक सृजन निमित्त उच्चारित या अभिव्यक्ति की स्वतंत्रता का सौन्दर्य बनता है! सहज और उपयोगी जानकारी के लिए शब्द एक हथियार है जिससे जीवन के संपूर्ण इतिहास की इतिवृत्तात्मक छवियाँ उदभाषित हो सकती है अतीत और वर्तमान के मध्य संस्कृति और ज्ञान का सेतु शब्दों का संसार ही है! शब्द से अधिक स्पष्ट अस्तित्व में कोई और बात दृष्टि गोचर नहीं हो सकती ! जीवन जब निस्तेज हो जाता है, शांत हो जाता है, मृत्यु हो जाती है तभी शब्द मौन हो पाता है, तभी शब्द की ध्वनि खोती है ! जीवन है तो शब्द है, शब्द की ध्वनि है, मानव व उसकी चेतना की अभिव्यक्ति का संतुलित संसार है! ' शब्द की अनुपस्थिति

जीवन की विडंबनाओं का चक्रव्यूह है। अतः शब्द की संतुलित यात्रा पर ही मानव जीवन का पथिक अपनी संवेदनाओं का आदान-प्रदान करता हुआ मानव होने की सफलता का अहसास करता है! शब्द ज्ञान से कृतार्थ व्यक्ति अनुभवों के विभिन्न क्षेत्रों में कृत कार्यों में सलंग्न रहता है, वह भीतरी संवेदनाओं और वस्तुओं के बीच एक संतुलित और सर्व स्वीकार्य संबध की परिपाटी और यथार्थ परक वस्तु का सटीक बोध करवा कर जीवन को देखता हुआ, सुनता हुआ, स्पर्श करता हुआ, सूंघता हुआ, स्वाद लेता हुआ सुख पूर्वक कर्ता, क्रिया और कर्म की श्रंखला में विचरण करता है! हमारी अभिव्यक्ति के लिए मातृभाषा/ साहित्य या अनुकरणीय भाषा के शब्दों की व्युत्पत्ति और विवेचना के साथ साथ उनका अर्थ बोध , देशज , तत्सम और तद्भव रूपों का अवबोध, आचरण और व्यवहार में प्रयोग में लाने की क्षमता का सघन प्रदर्शन, व्याकरणिक उपयोग और संश्लेषण विश्लेषण की समूची सक्षमता के मापदंड पर ही शब्द साधक की उपादेयता का बोध संभव हो सकता है! शब्द की संपूर्ण व्यापकता में अनेकानेक बोध और संवेदनाओ के गुच्छ स्थापित है , शब्द संयोजन व भावाभिव्यक्ति अलग चीज है। भावानुकूल शब्द भंडार में से शब्दों का चयन कर, शब्द की पहचान उपरांत भीतरी अनुभूति का रूपांतरण लिखित या मौखिक किया जा सकता है परंतु इसका आशय यह कतई नही हो सकता कि शब्दों की अभिव्यंजना के भीतरी सत्य का साक्षात्कार लेखक या रचना कार कर चुका है! इसके लिए शब्द की व्युत्पत्ति और विवेचना की जानकारी अत्यंत आवश्यक होती है! शब्द की प्रकृति और परिधि का प्रकाश अलग चीज है जो शब्दकार या शब्द ज्ञाता शब्द की बाह्य और भीतरी प्रकृति से तादात्म्य स्थापित कर तृप्ति का अनुभव करता है सही अर्थों में शब्द की मीमांसा का वही अधिकृत दावेदार है। शब्द की संपूर्ण व्यापकता का आधार है शब्द की निरपेक्षता से पहचान! शब्द साक्षी भाव से परिष्कृत और परिवर्द्धित होते है बुद्धि की अतिशयता की रश्मियाँ शब्द की नसों में चेतना का संचार कर सकती है परंतु उसके मूल संरचना और यथार्थ परक वस्तु विश्लेषण को प्रभावित नही कर सकती! इसे हम इस संदर्भ में समझने का प्रयास कर सकते है जब संवेदनाओं और जीवंत मूल्यों से शब्दों की जीवंतता समाप्त हो जाती है या केवल बनावटी/ झूठी/ मनगढ़ंत और भ्रामक तथ्यों को प्रचारित करने निमित्त शब्द संयोजन व भावाभिव्यक्ति का सहारा लिया जाता है तब शब्द अपनी प्रभुता खो देता है! शब्द की संपूर्ण व्यापकता मानवीय मूल्यों और जिंदगी की संजीदगी के स्पर्श पर ही निर्भर करती है! शब्द संसार भाषा की अभिव्यक्ति का सौन्दर्य है यह एक ऐसा आयोजन है जिसमें वस्तु, भाव और संवेदनाओं का गुंफन जीवन रूपी रथ को गति देता है ...शब्द का अपना प्रभाव है इस खाली जीवन में संचेतना का सक्रिय सत्य शब्द की यात्रा है , संसार में रहते हुए जागरण की सुगंध शब्दों की परिमल प्रभा है। संपूर्ण संकल्पों का अंत शब्दों की विश्रांत दशा है ! शब्द संकल्प और विकल्प का जोड़ है एक धारणा का साक्षेप बिंब है शब्द का अर्थ है हमारे भीतर चलते हुए सपनों की दौड़ ...एक खिंचाव ...एक अभिप्सा की नदी , एक यात्रा, एक कल्पना- विकल्पना ...एक जीवन जीने का सूत्र ...एक औषधि जिसे स्वीकार करना आवश्यक है! शब्द मानव के जीवन काल में एक आलोकमयी उपस्थिति है आंतरिक मनोभूमि की संवेदनशीलता का कल्पवृक्ष शब्दों का विस्तृत ज्ञान है जो शब्द की पृष्ठभूमि में समर्पित भाव से जुड़ जाता है वह अधिक मुखर हो जाता है और उसके मानव होने के समस्त द्वार खुल जाते है बशर्ते कि शब्द सीखना न हो अपितु शब्दों को जानना और जीवन के अनुभव कोष में शब्दों का परिमार्जन और परिवर्द्धन हो ! आवश्यकता के अनुसार अनेकानेक शब्द आ रहे है , असंख्य शब्द साधक शब्दों की परिमल वीणा को साधकर जीवन के विविध स्त्रोत प्रवाहित करने में तत्पर है। शब्द तिमिर में संघर्ष की किरणों की भाँति है ज्योति के अरुणोदय का कलरव शब्दों की मीमांसा में निहित है मनुष्य की सिमटती संकीर्णता में मनुजता के उच्च शिखर की संभावनाओं के स्त्रोत शब्दों से फूटते है चेतना पथ की यात्रा में संवाहक शब्द ही बनते है!

जिस घड़ी हमारे कदम शब्द की खोज, शब्द की प्रकृति, संकेत, प्रवृत्ति, और प्रतीक विधान की पहचान कर लेते है तभी भीतर की अनुभूतियों के साथ तादात्म्य स्थापित हो जाता है और तभी शब्द संयोजक व्यक्ति के स्वभाव, मनोविज्ञान, धारणा, कल्पना और संवेदना ओं के साथ साक्षात्कार स्थापित करता हुआ जीवन के गूढ़ार्थ व सत्यार्थ

का आचमन करने लगता है!' शब्द अनुभव से तय होता है, समूह की समेकित गवाहियों से तय होता है क्योंकि शब्द का साक्षात्कार व्यक्ति करता है समूह में सम्मिलित करने के लिए समान रूप से चैतन्यता का सौन्दर्य उपलब्ध रहता है!शब्द आस पास की यांत्रिक जड़ता के विरूद्ध जब तीक्ष्ण बनकर चुभते है और संवेदनाओं को झकझोरते लगते है तब शब्दों की मौलिक क्षमता और प्रभावोत्पादक दशा का परिचायक बनते है! हमारी संपूर्ण जिंदगी की धूरी शब्दों का खेल है,शब्दो का सार्थक समूह वाक्य बन जाता है, और इन्ही वाक्यो की रीढ पर भाषा खड़ी हो जाती है, वर्णमाला के सूत्र, स्वर व्यंजन और आरोह अवरोह लय और क्रिया के सिद्धांतो का श्रीगणेश होने लगता है, शब्द या स्वराघात के बाद ही संकेत अर्थ ग्रहण करते है और उन अर्थ की क्रिया प्रतिक्रियाओ के गुणात्मक या अगुणात्मक प्रभाव पर व्याकरण का निर्माण कर भाषा का स्वरूप तैयार किया जाता है! भाषा की संपूर्णता की पुष्टि वाक्य की प्रभावोत्पादकता , जीवन के तमाम अहसासो को समेटकर अभिव्यक्ति देने की क्षमता, जीवन के हर क्षण के अहसासो को , खूबसूरत या बदसूरत कहानी को किसी भी स्वीकृत विधा मे अंकित करने की क्षमता, और मानवीय गुणो और संवेदनाओ को अभिव्यक्ति देने की खूबसूरती केवल शब्द सामर्थ्य पर ही निर्भर है! शब्दों का जादूगर वही है जो शब्दो की गहराई से परिचित हो, भावो का समर्पण शब्दो से व शब्दो का भावो मे हो चुका हो , यह एकरसता की स्थिति तब कंठ की अभिव्यक्ति न होकर आत्मा की हो जाती है, अभिव्यक्ति तब बाहरी नही भीतरी होती है, और ऐसे मे शब्दो का प्रभाव चितावस्था मे अमिट छाप छोड़ देता है। कई बार सीखने की शेष्टा भाषा के आंतरिक सौंदर्य को नष्ट कर देता है, हर बनावट की विधा चमत्कार कर सकती है पर आत्मीय सौंदर्य का विस्तार नही कर सकती ! शब्द दो तरह से भावनाओ और बौद्धिकता के क्षेत्र मे काम करता है, और यही कारण है कि किसी सूत्र, विचार, प्रवचन , काव्य या उक्ति की जब हम व्याख्या करने लगते है तो अर्थ परिवर्तन के साथ साथ भाव व ज्ञान परिवर्तन के संकेत विभ्रान्ति की दशा मे स्वयं की सुविधा के अनुसार व्याख्या को अंजाम देने के अहंकार को तुष्टि मिल जाती है! शब्द कविता से हमे अंदरूनी रोग की औषधि तलाश करने का ख्याल आता है , जैसे हम ' समर्पण ' शब्द का इस्तेमाल उपयोग मे करे तो भक्त और ज्ञानी के समर्पण के अर्थ मे अंतर होगा यदि भक्त कहता है समर्पण तो वह कहता है कि' किसी परम के शरणो मे ' और जब ज्ञानी कहता है समर्पण तो उसका कथन है यहां कोई नही, किससे लडना है, जो है जो विद्यमान है उससे सहमत हो जाओ , ज्ञानी के लिए समर्पण प्राकृतिक होने मे है , उसके समर्पण का अर्थ है तथाता , जब कि भक्त का समर्पण स्व को मिटा देना है जो मौजूदा है जो श्रेष्ठ है उसी मे लीन हो जाओ! शब्द अपनी सामर्थ्य का संकेत विभिन्नार्थी देता है, आंतरिक भावदशा के शब्द रस से भीगी अभिव्यक्ति प्रभावोत्पादकता से परिपूर्ण व चिरस्थायी बन जाती है, शब्द अनंत मे डूबी आंखो के समान तनिक बाहर भी नही देख सकते,फक्त धडकनो की आवाजाही भी उसी वृंदावन के श्याम को समर्पित हो जाती है , जब कि ज्ञानी को हर शब्द के अनेकानेक अर्थ दिखलाई पडते है, वह शब्दो पर मिथ्यारोपण कर भावो को सही ठहराने की शेष्टा करता है, उसे शब्द और अर्थ दो दिखाई पडते है, क्योंकि ज्ञानी किसी भी स्तर पर अपने अहंकार की तुष्टि चाहेगा, और शब्द के अर्थ का सुविधाजनक दौहन करेगा। शब्द कविता के अंकुर की प्रारंभिक पंखुरी है, इसी की करामात से जिंदगी का आयना चमकदार और रोशन बनता है, जिंदगी के तमाम रिश्ते - नाते , प्रेम की लताऐ फलती फूलती है, अतः शब्द और कविता प्राण व देह की तरह जीवनदायिनी है। शब्द से अधिक स्पष्ट अस्तित्व में कोई और बात दृष्टि गोचर नही हो सकती ! जीवन जब निस्तेज हो जाता है शांत हो जाता है मृत्यु हो जाती है तभी शब्द मौन हो पाता है तभी शब्द की ध्वनि खोती है। जीवन है तो शब्द है शब्द की ध्वनि है मानव व उसकी चेतना की अभिव्यक्ति का संतुलित संसार है!

■■

डाक्टर प्रमोद शुक्ल 'अकोला' महाराष्ट्र की दो कविताएँ

(1) 'ताकतवर मानव'

आत्माएँ और आवाजें
अविनाशी एवं अदृश्य
होती हैं ।
आवश्यकता
केवल
उन्हें ढूँढ़ने
देखने और
सहेजने की होती है ।
यह भले ही शाश्वत सत्य हो
फिर भी हमने तो
हर रोज आत्माओं को
मरते देखा है ।
यदि आत्माएँ न मरतीं
तो कैसे होते
मासूमों और महिलाओं पर
इतने जुल्म,
कैसे होते किशोरियों पर
सामूहिक बलात्कार
कैसे होतीं मामूली-सी बात
पर
हत्याएँ !
रही बात
आवाजों के अविनाशी होने की
तो रुपयों की
चमक-दमक के आगे
कई आवाजों को
गूँगा होते देखा है हमने ।
अवांछित आवाजों को गूँगा कर देना ही
अनेक लोगों की
कमाई का साधन बना हुआ है ।
यह कलयुग का मानव है साहब
बहुत ताकतवर है
शाश्वत सत्य को भी बदल सकता है ।

(2). वास्तविकता

वो मिट्टी के
चूल्हे
वो चूल्हों की
रोटी
सोंधी सुगंधों से
महकती
रसोई
अम्मा के
हाथों का
कहाँ है
वो जादू
स्वादिष्ट भोजन
से बढ़ती थी
भूख
यादें ही यादें
वर्तमान
भुला दें
बचपन के झगड़े
झगड़ों की चोटें
वो बाबू (जी) के चाँटे
अम्मा का पल्लू
पल्लू से पुछते
आँखों के आँसू

डाक्टर प्रमोद शुक्ल

बिजली बिना
वो ढिबरी का
धुआँ और
धुएँ में पढ़ाई
पढ़ाई में होती
अक्सर खिंचाई
ऐसे ही पढ़े थे
पढ़कर गढ़े थे
हम अब बड़े हैं
विकास की नदी में
नहाए खड़े हैं
अब हम
बचपन को सपनों में
हरदम देखा करे हैं
हकीकत की दुनिया से
बिल्कुल परे हैं
ऊपर से चाहे
जैसे भी हों हम
मगर अब भी
भीतर से बिल्कुल
खरे हैं।

■■

मैं तुम्हें सहयोग दूँगी

चाहते हो साधना करना, करो तुम,
मैं तुम्हें सहयोग दूँगी।।

जानती हूँ भाव-तलगृह में छिड़ा जो,
कार्य उत्कट वेदनाओं के दमन का।
शैल खण्डित कर सभी कर्तव्य-पथ के,
वीतरागी बन अनल के आचमन का।

जो तपस्या को तुम्हारी दे सबलता,
मात्र वो संयोग दूँगी।

त्याग के इस यज्ञ की आहूतियों में,
होम कर दी हैं सभी दैहिक तृषाएँ।
ध्यान में तुमको रखा है ईश सम पर,
स्वाह कर दी हैं सभी अंतर मृषाएँ।।

नित्य उद्वेलित सभी वृथ कारकों को,
मुक्ति का चिरयोग दूँगी।।

तुम अधिष्ठित हो चुके प्रिय ! चेतना के,
गर्भ में उत्पत्ति का आधार बनकर।
अब मिलन हो या विरह आते हैं केवल,
प्रेम अनुरत दिव्यतम उपहार बनकर।

मैं तुम्हारे मौन को निज धीरता का,
सर्वदा बलयोग दूँगी।।

■■

मणि अग्रवाल 'मणिका'
देहरादून,उत्तराखंड

सुधा भारद्वाज, पुणे की दो लघु कथाएं

(1) अध्यात्म

वे बड़े सिद्ध बाबा माने जाते थे। जीवन में पूजा-पाठ की आवश्यकता पर उनका प्रवचन चल रहा था। लगातार हाथ से माला फेरते और मुँह से 'हरि ओम' का नाम-स्मरण करते सासुजी की निगाहें अपनी बहू के ऊपर जमी थीं। वे चाहती थीं कि उनकी बहू को भी इसका कुछ ज्ञान प्राप्त हो ताकि वह नादान भी भगवान के नाम स्मरण का महत्व समझ सके।बाबा जी बड़े ज्ञानी व्यक्ति थे। सास की मंशा समझते हुए उन्होंने सीधे बहू से प्रश्न किया, बिटिया कितनी बार भगवान का नाम ले लेती हो दिन में? बहू अचकचा गई, उत्तर नहीं दे पाई। बाबा जी ने कहा, बेटी अपनी माताजी का अनुसरण किया करो। देखो वे किस प्रकार धर्म-कर्म और अध्यात्म में लीन हैं।सिर झुकाए, आँखें नीची किए बहू ने उत्तर दिया,...बाबा जी, पिताजी की आयुर्वेदिक चाय, बच्चों को स्कूल के लिए तैयार करना, उनका टिफिन बनाना, पति के नाश्ते और टिफिन के बाद माताजी के लिए अलग सात्विक भोजन बनाना, इसी में सुबह का समय निकल जाता है। फिर वही चक्र दोपहर के खाने, शाम की चाय और रात का खाना बनाने में लगातार चलता रहता है। यही मेरी पूजा है, यही मेरा अध्यात्म है। अपनी बात कहने के बाद बहू के चेहरे पर एक अलग ही तेज चमक रहा था। बाबाजी को भी आज अध्यात्म के एक विस्तृत पहलू का ज्ञान हुआ।

(2) सफ़ेदपोश

वे प्रखर वक्ता के रूप में जानी जाती थीं। ऑनर किलिंग पर उनकी वाणी खूब चलती थी। उनके भावुक और धारदार वक्तव्य से आज कई अभिभावकों की आँखें भीग गईं थीं। क्या आप स्वयं अपने बच्चों को जाति-धर्म से बाहर अपना जीवनसाथी चुनने की आज़ादी प्रदान करेंगी?.., एक अभिभावक ने प्रश्न किया। दमदार स्वर में 'निश्चित' कहते हुए अनजाने में उन्होंने मुट्ठी में पड़ी कमरे की चाबी जोर से भींच ली जिसमें वह अपनी युवा बेटी को बंद कर आई थीं।

■ ■

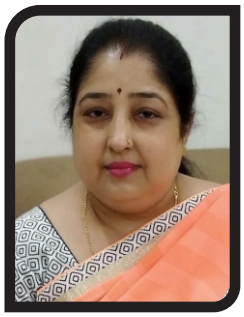

सुधा भारद्वाज
पुणे

दो लघुकथाएं

डॉ. विद्या सिंह
देहरादून

हिंदी की ग्रंथि

सुनंदा जब पार्क में पहुंची ,वह युवती पहले से ही बेंच पर बैठी हुई थी और अपने मोबाइल में कुछ देख रही थी। सुनंदा चुपचाप बेंच पर थोड़ी दूरी बना कर बैठ गई।' मैडम आप किस सेक्टर में रहती हैं ?' फ़ोन से नजर हटा कर लड़की ने पूछा। सुनंदा को अच्छा लगा।

'मैं सेक्टर 7 में रहती हूं और तुम?', ' मैं सेक्टर नौ में।यहां कंप्यूटर का कोर्स कर रही हूं। मैम आप टीचर हैं?' 'थी किंतु अब रिटायर हो गई हूं। तुम्हें कैसे मालूम हुआ?' ' बात करने के तरीके से। क्या विषय पढ़ाती थीं आप? मैं भी टीचिंग में जाना चाहती हूं किंतु कोई गाइड करने वाला नहीं है'। 'पूछो जो पूछना चाहती हो।', 'मैं नेट के बारे में जानना चाहती थी।', 'किस विषय में एम.ए. है तुम्हारा?', 'अर्थ शास्त्र में।', 'हिंदी में होता तो अभी बता देती। अपनी सहेली से बात करा देती हूं तुम्हारी।अर्थ शास्त्र पढ़ाती हैं वह।', 'मैम फिर किसी दिन कर लूंगी।' थोड़ी देर की गपशप के बाद लड़की ने सुनंदा का फ़ोन नंबर लिया और दोनों अपने-अपने घर वापस चली गईं। सुनंदा अभी हाथ- पैर धो ही रही थी कि फ़ोन

बज उठा।'मैम मैं शिवानी, मुझे बहुत अफसोस हो रहा है, आपसे झूठ बोला। मैं हिंदी में एम.ए.हूं।', 'फिर तुमने अर्थशास्त्र क्यों बताया?' 'जो सुनता है हिंदी में एम.ए. हूं , वही मज़ाक बनाता है, अतः अब मैं किसी को बताती ही नहीं।' ' हिंदी की ग्रंथि कब जाएगी?' सुनंदा सोच में पड़ गई।

कप की जाति

दरवाजे में मनीष माया से टकराते टकराते बचा।

'क्या करती हो बुआ! अभी सारी चाय गिर जाती।' वह ट्रे संभालता हुआ बोला। 'अरे रे मनीष मैं देख नहीं पाई। बैठक में चाय ले जा रहे हो। एक कप अलग से क्यों है?', ' एक सज्जन 'राम' हैं, इसीलिए। यह कप नीची जाति का है।' ' यह जात- पांत, छुआछूत कभी तो खत्म होना चाहिए ।पढ़े लिखे होने का फायदा क्या है?', ' लो आज से ही खत्म करता हूं ,वैसे फूफा जी का रंग आप पर भी चढ़ गया।' ट्रे लेकर मनीष भीतर गया और एक जैसे कप में सबकी चाय लेकर बाहर निकल गया। पिता राजकिशोर जी ने ट्रेन पर निगाह डाली, फिर मनीष को मुस्कुरा कर देखा। 'आज से जाति के हिसाब से कप नहीं दिए जाएंगे। सबके साथ एक जैसा बर्ताव करना है।' उन्होंने पत्नी को सुनाते हुए कहा। 'अभी कम सिर पर चढ़े हैं ये लोग और चढ़ा लो। फिर देखना, खेती-बाड़ी के लिए मजदूर ढूंढे से नहीं मिलेंगे। सब अपने को लाठ साहब समझने लगेंगे।' पत्नी ने नाराजगी से बोला और गुस्से में बड़बड़ाने लगीं। ■ ■

'ओ स्त्री'

ओ! स्त्री तू कितनी बदल गयी
आज लगती कुछ नयी
है वही सुघड़ ,सौम्य रूप तेरा पर
तेरी परिभाषा सुधर गयी
घर की सीमाओं का अंकुश मिटा
और परिधि भी बढ़ गयी

जया चौहान
नेपरविले सिटी, अमेरिका

घर की जिम्मेदारियों में तेरी
सहभागिता भी बढ़ गयी
तुझ पर विश्वसनीयता भी बढ़ गयी,
ओ! स्त्री तू कितनी बदल गयी
हिम्मत कर तूने किया
जो अपना उद्धार देख
तेरी अपनी कीमत बदल गयी ,
ओ स्त्री ! तू कितनी बदल गयी
आज लगती कुछ नयी
शास्त्रों ने माना तुझे अनुचरी
और सहभागी बन देख
तू कितनी निखर गयी
ओ स्त्री देख तू कितनी बदल गयी
आज कुछ लगती नयी
नाज़ तुझ पर करते हैं सब
गिर -गिर संभल -संभल
तू चलना सीख गयी
ओ स्त्री ! सच ही तो है
तू कितनी बदल गयी !
कंधे से कन्धा मिला कर
चल रही पौरुष के साथ
खड़ी निभा रही जिम्मेदारी
तेरे बिना अधूरी है ये सृष्टि सारी,
आज की नारी सब पर भारी
देखो! कहती दुनिया सारी
घर -गृहस्थी सब कामों को
निपटाती बारी-बारी,
ओ स्त्री ! देखो तू कितनी बदल गयी
आज कुछ लगती नयी !!
■ ■

सेना का रंगमंच और नाट्यकरण

डॉ॰ सुशील उपाध्याय

मशीन (प्रौद्योगिकी) चाहे कितनी भी समर्थ और एडवांस क्यों न हो जाए, लेकिन भाषा के प्रयोग और व्यवहार के मामले में वह मनुष्य का स्थान नहीं ले सकती। भाषा प्रौद्योगिकी उसी स्तर तक अपनी सामर्थ्य का प्रदर्शन कर सकती है, जितनी सूचनाओं के आधार पर उसे तैयार किया गया है। हाल के दिनों में दो रोचक उदाहरण देखने को मिले जो भाषा के प्रयोग की प्रौद्योगिकी-केंद्रित स्थिति को सामने रखते हैं। और साथ ही, ये भी बताते हैं कि भाषा का प्रयोग कितनी लापरवाही से हुआ है। पहला उदाहरण, जर्मन हिंदी प्रसारण डीडब्ल्यू पर एक जनवरी, 22 को 'सैन्य क्षमता बढ़ाने के लिए भारत क्या कर रहा है' शीर्षक से एक रिपोर्ट प्रकाशित हुई है। रिपोर्ट के लेखक भारतीय पत्रकार धारवी वैद हैं। इस रिपोर्ट में लिखा गया है, ''आधुनिकीकरण केवल हथियारों, प्लेटफार्मों और

उपकरणों के बारे में नहीं है क्योंकि अब हम तीनों चीजों को साथ लाने के लिए कमांड्स के नाटकीयता की भी बात कर रहे हैं। चीन पहले ही नाट्यकरण की ओर बढ़ चुका है और भारत अभी भी नाट्यकरण के लिए बातचीत ही कर रहा है। अभी आधुनिकीकरण को रंगमंच की ओर ले जाना चाहिए।''

ये रिपोर्ट भारत की सैन्य क्षमताओं के बारे में हैं इसलिए इसमें नाटकीयता, रंगमंच, नाट्यकरण आदि शब्द ध्यान खींचते हैं। आखिर, सैन्य-व्यवस्था में नाटक की शब्दावली क्यों प्रयोग की जा रही है! इन शब्दों के प्रयोग की सच्चाई जानने के बाद प्रौद्योगिकी के मौजूदा स्तर और इसके प्रयोगकर्ता की स्थिति पर हंसी छूट जाएगी। असल में, ये अंग्रेजी के शब्द मिलिट्री थिएटर कमांड्स, वैपन-प्लेटफार्म्स, थिएटर कमांड सेंटर स्थापित करने की प्रक्रिया से जुड़े हुए हैं। रिपोर्ट लेखक ने इनका अनुवाद मशीन ट्रांसलेशन टूल्स के जरिये किया है। ट्रांसलेशन टूल्स ने अपनी क्षमता के अनुसार इन शब्दों को नाटकीयता, रंगमंच, नाट्यकरण आदि में बदल दिया। और प्रयोग करने वालों ने इन अनुदित शब्दों को ज्यों का त्यों प्रयोग कर लिया। यदि इन्हें एक बार सरसरी निगाह से देख लिया जाता तो फिर ऐसी गड़बड़ी बिल्कुल न होती कि सैन्य-क्षेत्र में नाट्य शास्त्र के शब्द घुस जाते। इस रिपोर्ट में और डीडब्ल्यू पर उपलब्ध अन्य रिपोर्टों में इसी प्रकार की रोचक (कुछ हद तक परेशान करने वाले) उदाहरण मौजूद हैं। ऐसी की गलतियां बीबीसी के हिंदी पोर्टल पर भी देखने को मिलेंगी।दूसरा उदाहरण हिन्दुस्तान अखबार के 21 मार्च, 22 के अंक में प्रकाशित ''शोध चोरी पर सॉफ्टवेयर और गैजेट से नजर रखी जाएगी'' खबर में देखा जा सकता है। इस खबर में यूजीसी की नई गाइडलाइन के उल्लेख के साथ बताया गया है कि अब ''साहित्य चोरी और अकादमिक गड़बड़ी'' को तकनीक के माध्यम से रोका जाएगा। यहां साहित्य शब्द के प्रयोग को देखिए। सामान्य तौर पर देखें तो किसी लिखित/वाचिक भाषा के माध्यम से अंतःमन की अनुभूति, अभिव्यक्ति कराने वाली रचनाएं साहित्य कहलाती हैं। बाद साहित्य शब्द का अर्थ विस्तार हुआ तो इसे अन्य सभी विषयों के साथ जोड़ा जाने लगा। जैसे, प्रौद्योगिकी या विज्ञान संबंधी साहित्य (ऐसी लिखित या दस्तावेजी सामग्री जो उस विषय से संबंधित हो)। इसी क्रम में यूजीसी ने रिसर्च संबंधी अपनी अंग्रेजी शब्दावली में रिव्यू ऑफ लिटरेचर, प्लेजरिज्म ऑफ लिटरेचर आदि शब्दों का प्रयोग किया है। अनुवादकों ने आगा-पीछा सोचे बिना लिटरेचर का अनुवाद साहित्य कर दिया है, जबकि शोध के संदर्भ में लिटरेचर का अनुवाद शोध-सामग्री या अकादमिक सामग्री है। (जिसमें आंकड़े, फोटो, स्कैच, लिखित सामग्री, रिपोर्ट्स, लेक्चर्स, पिक्चर्स, ऑडियो-वीडियो कंटेंट आदि शामिल है और इसका संबंध काव्य, कथा-कहानी आदि से ही नहीं है।) ध्यान देने वाली बात यह है कि ऑनलाइन माध्यमों पर भी रिसर्च-लिटरेचर के लिए शोध-साहित्य और प्लेजरिज्म के लिए साहित्यिक-चोरी जैसे शब्दों की भरमार है। इन मामलों में प्रौद्योगिकी या ट्रांसलेशन टूल्स का उतना दोष नहीं है, जितना कि अनुवाद करने वालों का है। ये दो उदाहरण अंतिम नहीं हैं। प्रतिष्ठित मीडिया माध्यमों और बौद्धिक जगत के विख्यात लोगों के लेखन और वाचन में भी इसी प्रकार की न्यूनताएं दिखती हैं। वैसे, इससे पहले यूजीसी के नेट एग्जाम और यूपीएससी की कुछ परीक्षाओं में भी स्टील प्लांट का अनुवाद स्टील का पौधा हो चुका है.

जारी....

■■

विजयिनी' का हुआ लोकार्पण

विदुषी लेखिका डॉ. सुधा रानी पांडे जी पूर्व कुलपति, उत्तराखंड संस्कृत विश्वविद्यालय हरिद्वार द्वारा रचित नाटिका विजयिनी का लोकार्पण समारोह हिंदी साहित्य समिति देहरादून के तत्वावधान में दिनांक 3अप्रैल2022 को ओएनजीसी. अकादमी सभागार देहरादून में संपन्न हुआ।कार्यक्रम में मुख्य अतिथि के रूप में श्रीमती राधा रतूड़ी जी (आई.ए.एस) अपर मुख्य सचिव, उत्तराखंड शासन तथा अति विशिष्ट अतिथि के रूप में श्री मनोज बड़थ्वाल जी कार्यकारी निदेशक एवं संस्थान प्रमुख ओएनजीसी अकादमी देहरादून ने कार्यक्रम को गरिमा प्रदान की।कार्यक्रम की अध्यक्षता हिंदी साहित्य समिति के अध्यक्ष डॉ. राम विनय सिंह एसो. प्रो. डीएवी पीजी कॉलेज देहरादून तथा संचालन कवि साहित्यकार श्री शिव मोहन सिंह उप संपादक 'सच की दस्तक'

ने किया।कार्यक्रम का शुभारंभ सुप्रसिद्ध गीतकार श्रीमती नीता कुकरेती जी द्वारा सरस्वती वंदना से किया गया । मंचासीन अतिथि गण के स्वागत-सम्मान के बाद कवयित्री साहित्यकार श्रीमती डॉली डबराल ने स्वागत उद्बोधन किया ।इस अवसर पर विदुषी लेखिका डॉ. सुधा रानी पांडे जी ने कहा कि कालिदास की जीवन गाथा और विद्योत्तमा प्रसंग की कथावस्तु हेतु इस नाटिका में मैंने डॉ भगवतशरण उपाध्याय, डॉ. शिवानंद नौटियाल और डॉ. हरिदत्त भट्ट शैलेश द्वारा स्थापित मान्यता कि कालिदास गढ़वाल क्षेत्र के ही थे, का अनुसरण किया है। प्रसिद्ध सिद्ध पीठ कालीमठ का उल्लेख किया है तथा मंदिर में शिलापीठ पर अंकित पंक्तियों द्वारा कालीमठ का ऐतिहासिक साक्ष्य भी उद्धृत किया गया है।मुख्य अतिथि श्रीमती राधा रतूड़ी जी ने कहा कि आजादी का अमृत महोत्सव के उपलक्ष्य में महिला सशक्तिकरण के क्षेत्र में डॉ सुधा पांडेय जी की यह पुस्तक एक महत्वपूर्ण उपलब्धि है। श्री ललित मोहन रयाल ने आधुनिक युग में कालिदास के जीवन वृत्त पर विरचित कई रचनाओं का उल्लेख करते हुए कहा कि नाटक में विद्योत्तमा के सहज परिवेश को सुंदर ढंग से गूंथा गया है।कार्यक्रम के अध्यक्ष डॉ0 राम विनय सिंह जी ने पुस्तक के महत्व को प्रतिपादित करते हुए नाटिका साहित्य में ' विजयिनी' नाटिका के वैशिष्ट्य को प्रतिपादित किया।

उन्होंने तद्युगीन सौन्दर्य शक्ति को भाषा भाव के युगीन यथार्थ से जोड़ने के सफल संधान के लिए लेखिका की भूरि भूरि प्रशंसा की। स्त्री-पुरुष की

सामाजिक भेदबुद्धि को मानव मात्र की मानसिक अज्ञानता बताते हुए उन्होंने ज्ञानाश्रयी बुध्दि के सम्मान पर जोर दिया।उन्होंने विदुषी विद्योत्तमा और महाकवि कालिदास के अन्योन्य भाव संबंध की व्याख्या के प्रसंग में कालिदास को हिमालयी निसर्ग का उन्मुक्त उद्गाता बताया और मेघदूत में चित्रित यक्ष-यक्षिणी की गाथा को कालिदास और विद्योत्तमा की वास्तविक कथा बताते हुए कालिदास और विद्योत्तमा का वास्तविक उत्तराखंडी होना सिद्ध किया।डॉ0 सिंह ने बताया कि विद्योत्तमा का लिखित साहित्य भले उपलब्ध न हो परन्तु महाकवि कालिदास के काव्यों में उनका व्यक्तित्व विविध रूपों में उजागर हुआ है। हमें कालिदास की हृदयाभिव्यंजना में ही विदुषी विद्योत्तमा को खोजना चाहिए।श्री असीम शुक्ल जी ने कहा कि डॉ. सुधारानी पांडेय जी द्वारा रचित नाटिका 'विजयिनी' में सात्विक अहम् और विनम्र स्वत्व निहित हैं। इस कृति के माध्यम से निर्विवाद रूप से यह समझा जा सकता है कि विद्योत्तमा परिणिता के रूप में शक्ति स्वरूपा ही थी जिसने ज्ञान और साधना के उत्तुंग शिखर पर पर्णदत्त को प्रतिष्ठित करके कालिदास बनाया। डॉ मधु शर्मा जी ने 'विजयिनी' नाटिका को नारी जीवन की सशक्त अभिव्यक्ति बताया।इस पुस्तक पर अंतरराष्ट्रीय महिला केंद्र के सौजन्य से डॉ सुधा रानी पांडे जी को 'विदुषी विद्योत्तमा स्त्री शक्ति सम्मान' भी प्रदान किया गया है ।सारस्वत अतिथि के रूप में डॉ. मधु शर्मा वरिष्ठ साहित्यकार एवं पूर्व प्राचार्य एमकेपी पीजी कॉलेज देहरादून, श्री असीम शुक्ला वरिष्ठ साहित्यकार, श्री अनिल रतूड़ी, आयुक्त , सेवा का अधिकार आयोग उत्तराखंड , पूर्व महानिदेशक पुलिस उत्तराखंड शासन तथा श्री ललित मोहन रयाल आई ए एस. रहे।

■■

कलम इनकी जय बोल-

बलिदानी भगत सिंह

राष्ट्रधर्मिता के निर्वहन में पिछले अंकों में जनपद चंदौली के वरिष्ठ नागरिक रंगकर्मी लेखक कृष्णकांत श्रीवास्तव की लेखनी से बनारस की बेटी लक्ष्मीबाई, मालवीय जी, चंद्रशेखर आजाद, बंकिमचंद्र, नेताजी सुभाष, तिलक आदि पर प्रस्तुत कीर्तिस्तंभ, एक सराहनीय प्रयास रहा है। यह कीर्तिमाला चलती रहेगी ऐसा हमारा विश्वास है।

इस अंक में बलिदानी भगत सिंह की अमर गाथा पाठकों के समक्ष प्रस्तुत की जा रही है।

संपादक।

कृष्णकान्त श्रीवास्तव
वरिष्ठ रंगकर्मी - रचनाकर्मी

'उन्हें यह फ़िक्र है हरदम
नयी तर्ज़-ए-ज़फा क्या है?
हमें यह शौक है देखें
सितम की इंतहा क्या है?
दहर से क्यों खफा रहें,
चर्ख का क्या गिला करें।
सारा जहां अदू सही,
आओ !
मुकाबला करें.....।'

इन जोशीली पंक्तियों से भगत सिंह के बलिदानी शौर्य का अनुमान लगाया जा सकता है। फांसी के पहले अपने भाई कुलतार को भेजे एक पत्र में उन्होंने लिखा था- 'क्या आप कल्पना कर सकते हैं एक हुकूमत, जिसका दुनिया के इतने बड़े हिस्से पर शासन था, जहां सूर्य भी कभी अस्त नहीं होता था एक तेईस साल के युवक भगत सिंह से भयभीत हो गई थी।'

ध्यान से पढ़िएगा

मेरी आत्मा की शांति के लिए अपील न की जाए, क्योंकि जब तक लोग दुखी हैं, और उन्हें शांति नहीं मिलती, मुझे शांति कैसे मिलेगी.....

मेरी राख भारत की ही नहीं इस द्वीप की साझी जगह हुसैनीवाला, सतलज नदी में डाली जाए।

(भगत सिंह)

भगत जी की प्यारी बहन अमर कौर 14 जनवरी 1984 को अपनी वसीयतनामा में जिक्र करती हैं-- '1947 में अंग्रेज जाते समय हमें दो फाड़ (विभाजन) खूनोंख़ून कर गए थे। पिछले समय मैं सीमा पार कर भाइयों से मिलने

को तड़पती रही हूं, लेकिन कोई जरिया नहीं बन पाया। पार जा रहे हैं नदी के पानी के साथ मेरी याद उस ओर से भाई बहनों तक भी पहुंचे। हुसैनीवाला से वीर भगत सिंह, सुखदेव, राजगुरु और बी.के.दत्त की यादगार साफ तौर पर 'इंकलाब जिंदाबाद' का संदेश सब तक पहुंचाएगी। मेरे शहीद भाइयों के संदेश को याद करना....

वे आज भी अमर हैं।

भगत सिंह

जीवन वृत्त-

जन्म 28 सितंबर 1907, आश्विन कृष्ण पक्ष सप्तमी। अन्य साक्ष्यों के अनुसार उनका जन्म 27 सितंबर 1907 को माना जाता है।

परिवार सिख किसान परिवार।

पिता का नाम सरदार किशन सिंह।

माता का नाम विद्यावती कौर।

प्रारंभिक शिक्षा अमृतसर में।

13 अप्रैल, 1919 को अमृतसर में हुए जलियांवाला बाग हत्याकांड ने भगत सिंह की चेतना पर गहरा प्रभाव डाला। वे लाहौर में नेशनल कॉलेज की पढ़ाई छोड़कर भारत की आजादी के लिए 'नौजवान भारत सभा' की स्थापना की ।सन 1922 में 'चौरी-चोरा हत्याकांड' के बाद जब गांधीजी ने किसानों का साथ नहीं दिया तब वे बहुत निराश हुए। उसके बाद उनका 'अहिंसा' में विश्वास कमजोर होने लगा और वे इस निष्कर्ष पर पहुंचे कि 'सशक्त क्रांति (वायलेंस इन नॉन वायलेंस) ही स्वतंत्रता दिलाने का एकमात्र रास्ता है।

इसके बाद वे चंद्रशेखर आजाद के नेतृत्व में गठित 'गदरदल' का हिस्सा बन गए। काकोरी कांड में रामप्रसाद बिस्मिल सहित चार क्रांतिकारियों को फांसी और 16 अन्य को कारावास की सजा से भगत सिंह इतने अधिक उद्विग्न हुए कि चंद्रशेखर आजाद के साथ उनकी पार्टी 'हिंदुस्तान रिपब्लिकन एसोसिएशन' से जुड़ गए और उसके साथ एक नया नाम दिया 'हिंदुस्तान सोशलिस्ट रिपब्लिकन एसोसिएशन। इस संगठन का उद्देश्य सेवा - त्याग और पीड़ा झेल सकने वाले नवयुवक को तैयार करना था।

क्रांतिकारी गतिविधियां-

उस समय भगत सिंह की उम्र करीब 12 वर्ष के थे जब जलियांवाला बाग हत्याकांड हुआ था । इसकी सूचना मिलते ही भगत सिंह अपने स्कूल से 12 मील पैदल चलकर जलियांवाला बाग पहुंचे। वे अत्याधिक मर्माहत हुए। गांधी जी का असहयोग आंदोलन छिड़ने के बाद में गांधीजी के अहिंसात्मक तरीके और क्रांतिकारियों के आंदोलन में वे अपने लिए रास्ता चुनने लगे। इसी बीच गांधी जी द्वारा अचानक असहयोग आंदोलन को रद्द कर देने के कारण भगत सिंह के मन मे थोड़ा रोष उत्पन्न हुआ। वे अहिंसात्मक आंदोलन की जगह देश की जनता के लिए हिंसात्मक क्रांति के मार्ग को अपनाना ज्यादा उचित समझने लगे। अब उनके नए साथी चंद्रशेखर आजाद, सुखदेव राजगुरु इत्यादि थे।

काकोरी कांड के बाद अंग्रेजों ने हिंदुस्तान रिपब्लिकन एसोसिएशन के क्रांतिकारियों की धरपकड़ तेज कर दी और जगह-जगह अपने एजेंट बहाल कर दिए। भगत सिंह और सुखदेव लाहौर चले गए। वहां उनके चाचा ने एक खटाल खोल कर दिया और कहा अब यहीं रहो और दूध का व्यापार करो। वे भगत सिंह की शादी कराना चाहते थे और एक बार लड़की वालों को भी लेकर पहुंचे थे ।भगत सिंह कागज- पेंसिल लेकर दूध का हिसाब करते, पर हिसाब कभी भी सही नहीं मिलता ।सुखदेव ढेर सारा दूध खुद पी जाते और दूसरों को भी मुफ्त में पिला देते थे।

भगत सिंह को फिल्में देखना और रसगुल्ले खाना काफी पसंद था। वे राजगुरु और यशपाल के साथ जब भी मौका मिलता था फिल्में देखने चले जाते। चार्ली चैपलिन की फिल्में उन्हें बहुत पसंद थी। चंद्रशेखर आजाद इस बात पर बहुत गुस्सा करते थे।

भगत सिंह ने राजगुरु के साथ मिलकर 17 दिसंबर 1928 को लाहौर में सहायक पुलिस अधीक्षक रहे अंग्रेज अधिकारी जे.पी. सांडर्स को मारा था।क्रांतिकारी साथी बटुकेश्वर दास के साथ मिलकर भगत सिंह ने वर्तमान नई दिल्ली स्थित ब्रिटिश भारत की तत्कालीन सेंट्रल असेंबली के सभागार संसद भवन में 8 अप्रैल 1929 को अंग्रेज सरकार को जगाने के लिए बम और पर्चे भी फेंके थे। (इन एक्ट ऑफ वायलेंस इन नॉन-वायलेंस)

बम फेंकने के बाद वहीं पर दोनों ने अपनी गिरफ्तारी भी दी।

व्यक्तित्व-कृतित्व-

जेल के दिनों में उनके लिखे खतों और लेखों से उनके विचारों का अंदाजा लगाया जा सकता है। उन्होंने भारतीय समाज में विशेष रूप से जाति और धर्म के कारण आई विषमताओं पर दुख व्यक्त किया था। उन्हें बांग्ला भाषा भी आती थी जिसे उन्होंने बटुकेश्वर दत्त से सीखी थी।

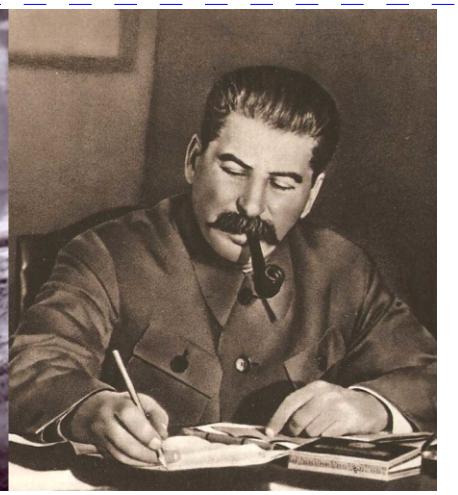

उनका विश्वास था कि उनकी शहादत से भारतीय जनता और उद्विग्न हो जाएगी और ऐसा उनके जिंदा रहने से शायद ही हो पाए। इसी कारण उन्होंने मौत की सजा सुनाने के बाद माफीनामा लिखने से साफ मना कर दिया। पंडित रामप्रसाद बिस्मिल ने जो जो दिशा-निर्देश दिए थे भगत सिंह ने उसका अक्षरशः पालन किया।

जेल में भगत सिंह करीब 2 साल रहे । वहां भी उनका अध्ययन लगातार जारी रहा। अपने लेखों में उन्होंने कई तरह से पूंजीवादियों को अपना शत्रु बताया। मेरे शब्दों में -'कार वालों के कारण ही करोड़ों बेकार हुए हैं।'

उन्होंने लिखा कि मजदूरों का शोषण करने वाला चाहे एक भारतीय ही क्यों न हो वह मेरा शत्रु है। उन्होंने जेल में अंग्रेजी में एक लेख लिखा था - 'मैं नास्तिक क्यों हूं।' जेल में 64 दिनों का भूख हड़ताल भी किया। इस भूख हड़ताल में उनका एक साथी यतींद्रनाथ बोस ने दम तोड़ दिया।

'वीरता के कार्य किए बिना, वीरता का प्रदर्शन किए बिना, साहस के साथ इतिहास बनाएं बिना इतिहास लिखना हमारे वक्त का एक बुरा सपना है। वीरता को वास्तविकता बनाने का अवसर ना मिलना हमारे लिए अफसोस की बात है।'(हिंदू पदपादशाही)

'राजनीतिक दासता को कभी भी आसानी से उखाड़ फेंका जा सकता है। लेकिन सांस्कृतिक वर्चस्व के बंधनों को तोड़ना मुश्किल है।(हिंदू पदपादशाही)

'हे स्वतंत्रता, जिसकी मुस्कान हम कभी नहीं छोड़ते, आओ उन आक्रामक मूर्खों को बताओ, आपके मंदिर में एक युग से अधिक बहने वाला रक्त प्रवाह हमारे लिए मीठा है जंजीरों में जकड़ी नींद से ज्यादा।

(थॉमस मूर की पंक्तियां सावरकर द्वारा उद्धृत हिंदू पदपादशाही)

विशेष-

भगत सिंह का उनके साथियों के नाम अंतिम पत्र-

फांसी से एक दिन पहले 22 मार्च, 1931 को भगत सिंह ने अपने साथियों के नाम अंतिम पत्र लिखा था। इस पत्र में एक-एक शब्द उनकी बहादुरी और देशप्रेम को दर्शाता है। आइए पढ़ते हैं उनकी आखिरी चिट्ठी.....

..... 'साथियों स्वाभाविक है कि जीने की इच्छा मुझ में भी होनी चाहिए, मैं इसे छिपाना नहीं चाहता, लेकिन मैं एक शर्त पर जिंदा रह सकता हूं कि मैं कैद होकर या पाबंद होकर जीना नहीं चाहता।

मेरा नाम हिंदुस्तानी क्रांति का प्रतीक बन चुका है और क्रांतिकारी दल के आदर्शों और कुर्बानियों ने मुझे बहुत ऊंचा उठा दिया है - इतना ऊंचा कि जीवित रहने की स्थिति में इससे ऊंचा में हरगिज नहीं हो सकता।

आज मेरी कमजोरियां जनता के सामने नहीं है। अगर मैं फांसी से बच गया तो वो जाहिर हो जाएंगी और क्रांति का प्रतीक चिन्ह मदिम पड़ जाएगा या संभवत मिट ही जाए, लेकिन दिलेराना ढंग से हंसते-हंसते मेरे फांसी चढ़ने की सूरत में हिंदुस्तान की माताएं अपने बच्चों के भगत सिंह बनने की आरजू करेंगी और देश की स्वाधीनता के लिए कुर्बानी देने वालों की तादाद इतनी बढ़ जाएगी कि क्रांति को रोकना साम्राज्यवाद या तमाम शैतानी शक्तियों के बूते की बात नहीं रहेगी।

हां, एक विचार आज भी मेरे मन में आता है कि देश और मानवता के लिए जो कुछ करने की हसरते मेरे दिल में थी उनका हजारवां भाग भी पूरा नहीं कर सका। अगर स्वतंत्र जिंदा रह सकता तब इन्हें करने का अवसर मिलता और मैं अपनी हसरते पूरी कर सकता।

इसके सिवाय मेरे मन में कभी कोई लालच फांसी से बचे रहने का नहीं आया। मुझसे अधिक सौभाग्यशाली कौन होगा?

आजकल मुझे खुद पर बहुत गर्व है। अब तो बड़ी बेताबी से अंतिम परीक्षा का इंतजार है।

कामना है कि यह और नजदीक हो जाए।

आपका साथी
भगत सिंह

और अंत में

सरदार भगत सिंह भारतीय स्वाधीनता के एक ऐसे ज्योतिपुंज हैं जिनका व्यक्तित्व और कृतित्व कालजायी है।

भगत सिंह ना मार्क्सवादी थे, ना वामपंथी थे । वे सिर्फ हिंदुत्व के पुरोधा-स्वतंत्रतावीर के नाम से सदा विख्यात रहे।

23 वर्ष की उम्र, 23 मार्च का दिन संध्या समय, गोधूलि की बेला, करीब 7 बज के 33 मिनट पर भगत सिंह तथा उनके दो साथियों सुखदेव व राजगुरु को फांसी दे दी गई।

कहा जाता है कि जेल के अधिकारियों ने जब उन्हें यह सूचना दी कि उनके फांसी का वक्त आ गया है तो भगत सिंह ने कहा- 'ठहरीय पहले एक क्रांतिकारी दूसरे से मिल तो ले।

पवन में हिलोरें मारती गेहूं की स्वर्ण बालियां,

डूबता हुआ सूरज

और

फांसी की वेदी पर मौज मस्ती से गाती बलिदानी टोली.....

मेरा रंग दे बसंती चोला
मेरा रंग दे.....
मेरा रंग दे बसंती चोला
माय रंग दे बसंती चोला।

'इस बसंती चोले का बसंती रंग धीरे-धीरे इतना चढ़ा कि कुछ सालों में ही ब्रिटिश साम्राज्य का कभी ना डूबने वाला सूरज भारतभूमि से सदा-सदा के लिए अस्त हो गया.....।'

पीवी सिंधु पहली बार बनीं स्विस ओपन चैंपियन

बासेल।भारत की शीर्ष महिला बैडमिंटन खिलाड़ी पीवी सिंधू ने स्विस ओपन सुपर 300 टूर्नामेंट के फाइनल में रविवार को यहां थाईलैंड की बुसानन ओंगबामरंगफान को हराकर मौजूदा सत्र का अपना दूसरा महिला एकल खिताब जीता। टूर्नामेंट में अपना लगातार दूसरा फाइनल खेल रही दो बार की ओलंपिक पदक विजेता सिंधू ने यहां सेंट जैकबशाले में चौथी वरीयता प्राप्त थाईलैंड की खिलाड़ी को 49 मिनट तक चले मुकाबले में 21-16, 21-8 से हराया। बुसानन के खिलाफ 17 मैचों में यह सिंधू की 16वीं जीत है। वह उनसे सिर्फ एक बार 2019 हांगकांग ओपन में हारी है। सिंधू पिछले सत्र के फाइनल में रियो ओलंपिक की स्वर्ण पदक विजेता स्पेन की कैरोलिना मारिन से हार गई थीं। हैदराबाद की 26 वर्षीय खिलाड़ी की इस स्थल से हालांकि सुखद यादें जुड़ी है। उन्होंने 2019 में विश्व चैंपियनशिप में यहां स्वर्ण पदक जीता था।अंतरराष्ट्रीय सुपर 300 जीता था। सुपर 300 टूर्नामेंट बीडब्ल्यूएफ (विश्व बैडमिंटन महासंघ) टूर कार्यक्रम का दूसरा सबसे निचला स्तर है। सिंधू ने इस मैच में आक्रामक शुरुआत की और 3-0 की बढ़त बना ली। बुसानन ने हालांकि वापसी करनी शुरू की और स्कोर को 7-7 से बराबर कर लिया। बुसनान सिंधू को नेट से दूर रखने की कोशिश कर रही थी लेकिन अपने शॉट को ठीक से खत्म नहीं कर पा रही थी। ब्रेक के समय सिंधू के पास दो अंकों की बढ़त थी। बैकलाइन के पास शानदार शॉट से सिंधू को चार गेम प्वाइंट मिले और उसने इसे भुनाने में देर नहीं की। दूसरे गेम में बुसनान सिंधू को टक्कर देने में नाकाम रही। सिंधू ने 5-0 की बढ़त हासिल करने के बाद इसे 18-4 किया और फिर आसानी से मैच जीत लिया।

मनोज उपाध्याय
खेल सम्पादक

भारत की पहली फुल लेंथ फीचर फिल्म
राजा हरिश्चंद्र

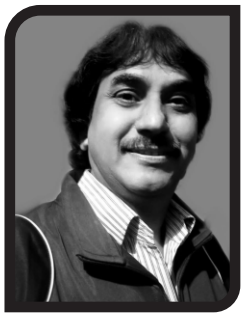

बृजेश श्रीवास्तव मुन्ना
दीनदयाल उपाध्याय नगर
जनपद चंदौली

हमारे देश में दो चीजें बहुत ज्यादा लोकप्रिय हैं पहला क्रिकेट और दूसरा फिल्में। क्रिकेट के बारे में तो काफी लोगों को पता है लेकिन भारतीय सिनेमा के इतिहास के बारे में बहुत कम लोग जानते हैं। फिल्म प्रोडक्शन के आधार पर भारतीय फिल्म उद्योग दुनिया के सबसे बड़े फिल्म उद्योग में से एक है।

क्योंकि भारत कई भाषाओं का देश है, ऐसे में यहां हिंदी, भोजपुरी, तामिल, मलयालम, तेलुगू, पंजाबी, बंगला आदि सभी क्षेत्रीय भाषाओं की अपनी-अपनी फिल्म इंडस्ट्री है। जहां तक देश की राजभाषा हिंदी की बात है तो इसके अंतर्गत बनने वाली फिल्मों को 'बॉलीवुड इंडस्ट्री' के नाम से जाना जाता है। बॉलीवुड फिल्मों का गढ़ देश की आर्थिक राजधानी मुंबई है। बॉलीवुड फिल्मों के अधिकतर प्रोडक्शन हाउस मुंबई में ही मौजूद है।

आज भारतीय फिल्म इंडस्ट्री सौ साल से भी अधिक पुरानी हो चुकी है।

आज उसने एक ऐसा मुकाम पा लिया है जहां उसे चुनौती दे पाना किसी के लिए संभव नहीं है। भारतीय फिल्मों में मौजूद ग्लैमर हो या संजीदगी, अभिनय हो या नई तकनीक , गीत-संगीत हो या नृत्य शैली , यहां तक की पटकथा और संवादों का भी विश्व स्तर पर कोई मुकाबला नहीं कर सकता ।

लेकिन भारतीय सिनेमा का यह सफर इतना भी आसान नहीं रहा। अपनी 100 साल से अधिक की उम्र में भारतीय फिल्म उद्योग ने न जाने कितने उतार-चढ़ाव देखे , न जाने कितनी ही प्रेम कहानियां बनी और वे दुखद अंत के साथ समाप्त हुई। निसंदेह इस इंडस्ट्री ने हजारों लोगों को अपनी पहचान स्थापित करने का सुनहरा अवसर दिया , हजारों लोगों को रोजगार दिया , लेकिन ऐसे भी बहुत लोग हैं जो इनकी अंधेरी गलियों में न जाने कहां गुम हो गए किसी को पता तक नहीं चला।

आइए आप जानते हैं भारत में बनने वाली फुल लेंथ की सबसे पहली फीचर फिल्म कौन थी....?

भारत में सबसे पहली पूरी लम्बाई की नाट्यरूपक फ़िल्म (फुल लेंथ फीचर फ़िल्म) 'राजा हरिश्चंद्र' थी जो 3 मई 1913 को रिलीज हुई थी। इस फिल्म का निर्माण दादा साहब फाल्के ने किया था। इस फिल्म की सबसे बड़ी विशेषता यह थी कि यह फिल्म पूरी तरह स्वदेश निर्मित थी। फिल्म बनाने के लिए कोई भी विदेशी सहायता नहीं ली गई थी। उनके इस बेमिसाल योगदान के लिए उन्हें 'भारतीय सिनेमा का पिता' कहा जाता है।

दादा साहब फाल्के का जन्म महाराष्ट्र के नासिक शहर से कुछ दूरी पर स्थित भगवान शंकर के प्रसिद्ध तीर्थ स्थान त्रंबकेश्वर में 30 अप्रैल 1870 को एक मराठी परिवार में हुआ था। इनके पिता संस्कृत के प्रकांड विद्वान थे और मुंबई के एलफिंस्टम कॉलेज में पढ़ाते थे। बचपन के दिनों से ही फाल्के की रुचि कला की ओर थी और इसी क्षेत्र में वे अपना कैरियर बनाना चाहते थे । इसके लिए उन्होंने 1885 में जे.जे.कॉलेज ऑफ़ आर्ट्स, मुंबई में दाखिला लिया। उन्होंने बड़ौदा के मशहूर कला भवन से भी मूर्तिकला, चित्रकला, पेंटिंग और फोटोग्राफी की भी शिक्षा ली। इसके बाद उन्होंने नाटक कंपनी में चित्रकार के रूप में काम करना शुरू किया। दादा साहेब 1903 में भारतीय पुरातत्व विभाग में फोटोग्राफर के रूप में नियुक्त हुए। ये प्रशिक्षित कलाकार और मंच के अभिनेता भी थे। फ़ाल्के जादूगरी के भी शौकीन थे।

दादा साहब फाल्के को फिल्म बनाने की प्रेरणा उस समय मिली, जब वे सन 1910 में क्रिसमस के अवसर पर मुंबई के 'अमेरिकन इंडिया थिएटर' में एक अंग्रेजी फिल्म 'द लाइफ ऑफ क्राइस्ट' देखने गए। यह फिल्म ईसा मसीह के जीवन पर आधारित थी। कहा जाता है कि फिल्म देखते समय दादासाहेब को ईसा मसीह के स्थान पर राम , कृष्ण , समर्थ गुरु रामदास , शिवाजी , तुकाराम जैसी महान विभूतियां दिखाई देने लगी। उन्होंने सोचा क्यों नहीं सिनेमा के माध्यम से भारत की महान विभूतियों को दिखाया जाए। फाल्के ने इस फिल्म को कई बार देखा और उनके मन में फिल्म निर्माण का अंकुर फूट पड़ा। इस फिल्म से प्रेरणा लेकर फाल्के ने निर्णय कर लिया कि उनकी जिंदगी का मकसद फिल्मकार बनना है । फाल्के के पास सभी तरह का हुनर था। वे नए-नए प्रयोग करते रहते थे। फिल्म बनाने के लिए फाल्के ने तैयारी शुरू कर दी । उन्होंने 5 पौंड में एक सस्ता कैमरा खरीदा और शहर के सभी सिनेमाघरों में जाकर फिल्मों का अध्ययन करना शुरू किया। लगातार दो महीने तक वे हर रोज शाम को चार से पांच घंटे सिनेमा देखा करते और बाकी समय में फिल्म बनाने की उधेड़बुन में लगे रहते हैं । दिन में बीस - बीस घंटे में काम करते रहने से उनकी सेहत पर बुरा असर पड़ा और उनकी एक आंख जाती रही । उस समय उनकी पत्नी सरस्वती बाई ने उनका पूरा साथ दिया। अपनी कार्यकुशलता को सिद्ध करने के लिए फाल्के ने एक बर्तन में मटर का बीज बोया और फिर इसके बढ़ने की प्रक्रिया को एक समय में एक फ्रेम खींचकर साधारण कैमरे से उतारा । इसके लिए उन्होंने 'टाइमैपस फोटोग्राफी' की तकनीक इस्तेमाल की और सफल हुए।

फाल्के ने अपनी पत्नी की 'जीवन बीमा पॉलिसी' को गिरवी रखकर ऊंचे ब्याज दर पर ऋण लिया और फिल्म प्रोडक्शन में एक क्रैश कोर्स करने के लिए फरवरी 1912 में लंदन गए । वहां पहुंचकर बाइस्कोप फिल्म पत्रिका की सदस्यता ली और वहां रह कर फिल्म बनाने की तकनीक सीखी। अप्रैल 1912 में वे वापस भारत आए और फिल्म निर्माण का काम शुरू किया ।

दादा साहब फाल्के ने 1 अप्रैल 1912 को 'फाल्के फिल्म' की नींव रखी। क्योंकि उस समय भारत में फिल्म बनाने के उपकरण उपलब्ध नहीं होते थे, इसलिए उन्होंने जर्मनी, अमेरिका, फ्रांस, इंग्लैंड जैसे देशों से फिल्म बनाने के उपकरण मंगाये।

अब फिल्म बनाने के लिए एक कहानी की जरूरत थी। हम

पौराणिक कथाओं और रामायण-महाभारत जैसे महाकाव्यों में अक्सर सत्य के मार्ग पर चलने वाले अयोध्या के प्रसिद्ध सूर्यवंशी राजा 'राजा हरिश्चंद्र' के बारे में सुनते चले आये है। अपनी पहली फिल्म की कहानी के लिए फाल्के ने 'राजा हरिश्चंद्र' की जीवनी को चुना। फिल्म के हिसाब से राजा हरिश्चंद्र की जीवनी को रणछोड़भाई उदय राम ने कहानी के रूप में लिखा। इसी कहानी के आधार पर फाल्के ने फिल्म की पटकथा लिखी।

यह फिल्म उस दौर में बन रही थी जब समाज में महिलाओं का फिल्मों में काम करना सामाजिक दृष्टिकोण से बहुत बुरा माना जाता था। महिलाएं खुद भी फिल्मों में काम करने के लिए तैयार नहीं होती थी। ऐसे में फाल्के की इस फ़िल्म में सभी किरदार पुरुष थे यहां तक कि महिला किरदार भी पुरुषों ने ही निभाया।

फिल्म में प्रमुख भूमिका यानि राजा हरिश्चंद्र का रोल दत्तात्रेय दामोदर दबके ने अदा किया। राजा हरिश्चंद्र की पत्नी तारामती की भूमिका अन्ना सालुंके ने निभाई जो एक होटल में बावर्ची का काम करते थे। अन्ना सालुंके जिस भोजनालय में काम करते थे, वहां फाल्के नियमित रूप से आते- जाते थे। फाल्के को अपनी फिल्म में राजा हरिश्चंद्र की पत्नी तारामती के लिए एक महिला कलाकार की आवश्यकता थी , पर कोई महिला फिल्म में काम करने के लिए तैयार नहीं हो रही थी। यहां तक की वे महिला कलाकार की तलाश में रेड लाइट एरिया भी गए , पर वेश्याओं और नाचने वाली लड़कियों ने भी फ़िल्म में काम करने से इंकार कर दिया था। निराश फाल्के ने जब सालुंके को देखा तो उनका रूप जनाना लगा और वे पतले-दुबले भी थे। अब फाल्के को अपनी फिल्म के लिए महिला कलाकार मिल गई । फाल्के ने सालुंके को फ़िल्म में एक महिला की भूमिका निभाने के लिए राजी कर लिया। सालुंके को उस भोजनालय में मासिक वेतन 10 रुपया था। इसलिए वे 15 रुपये पर फिल्म में काम करने को तैयार हो गए। हरिश्चंद्र के पुत्र रोहिताश की भूमिका दादा साहब फाल्के के सात वर्षीय पुत्र भालचंद्र फालके ने, ऋषि विश्वामित्र की भूमिका जी.व्ही.साणे ने अदा की। इनके अलावा डी. डी.दाबके,पी.जी.साणे, दत्तात्रेय छीरसागर, गणपति शिंदे, विष्णुहरि औधकर,नाथ तेलंग आदि कलाकारों ने काम किया किया। ये सभी कलाकार मराठी थे

इस फिल्म के निर्माण के लिए मुंबई के दादर में सेट लगाया गया। दिन की रोशनी में शूटिंग हुई। वे रात को एक्सपोज्ड फुटेज को डिवलप करते थे और अपनी पत्नी की सहायता से प्रिंट करते थे । कठिन मेहनत के बाद 3700 फीट की लंबी फिल्म तैयार हुई। कुल 15 से 20 हजार रुपये खर्च हुए । पैसा कम पड़ने पर फाल्के को अपनी पत्नी सरस्वती बाई के गहने तक बेचने पड़ गए। सरस्वती बाई को 500 लोगो के लिए खाना बनाने और कलाकारों के कपड़े धोने तक में सहयोग करना पड़ गया।

तमाम तरह की चुनौतियों को पार करने के बाद फाल्के ने 7 महीने और 21 दिन में भारत की पहली फीचर फिल्म 'राजा हरिश्चंद्र' का निर्माण पूरा किया । दादा साहब फाल्के इस फिल्म के निर्माता, निर्देशक, पटकथा लेखक, कैमरा मैन, एडिटर और मेकअप- आर्टिस्ट और कला निर्देशक सभी कुछ थे । यह फिल्म पूरे 40 मिनट की थी और ब्लैक एंड वाइट थी। इस फिल्म में कोई आवाज नहीं थी, यानी यह गूँगी फिल्म थी यानि ध्वनि रहित मूक फ़िल्म थी। इसलिए इसकी बातों को दर्शकों को समझाने के लिए शब्दों का सहारा लिया गया । इसमें दृश्यों के भीतर अंग्रेजी और हिंदी में कहानी लिखकर टाइटल के रूप में दिखाया गया।

दादा साहब फाल्के महान चित्रकार 'राजा रवि वर्मा' से बहुत प्रभावित थे । वर्मा जी रामायण और महाभारत जैसे पौराणिक कथाओं के दृश्यों की चित्रकारी करते थे । इसलिए इस फिल्म की शुरुआत में फाल्के ने राजा रवि वर्मा द्वारा बनाये गए राजा हरिश्चंद्र, उनकी पत्नी और पुत्र के चित्रों की प्रतिलिपि की झांकी को प्रदर्शित किया। इन्ही चित्रों की झांकी से फिल्म आरंभ होती है।

इसके पोस्टर अंग्रेजी और मराठी में बनाए गए।

भारत की पहली फुल लेंथ फीचर

फिल्म 'राजा हरिश्चंद्र' का प्रीमियर शो 21 अप्रैल 1913 को को 'ओलंपिया थिएटर' में हुआ।

पश्चिमी फिल्म के नक चढ़े दर्शकों के साथ-साथ प्रेस ने भी इस फिल्म की उपेक्षा की। लेकिन फाल्के निराश नहीं हुए क्योंकि वे जानते थे कि वे आम जनता के लिए फिल्म बना रहे हैं।

राजा हरिश्चंद्र के पोस्टर अंग्रेजी और मराठी में बनाए गए और 3 मई 1913 को शुक्रवार के दिन 'कोरोनेशन थिएटर' में यह फिल्म रिलीज हुई।

भारत की पहली फीचर फिल्म को देखने के लिए लोग इतने उत्साहित थे कि 3 मई 1913 को तपती गर्मी से जूझते हुए लोगों ने गिरगांव के 'कोरोनेशन थिएटर' के बाहर टिकट खरीदने के लिए लंबी लाइन लगा ली। पहले शो के दौरान जुटी भीड़ सिनेमा हॉल से निकलकर सड़क तक पहुंच गई थी। फिल्म बहुत ज्यादा सफल रही और पूरे 23 दिन तक चली जो एक रिकॉर्ड है । व्यवसायिक रूप से यह फिल्म सफल साबित हुई।

दादा साहब फाल्के को भारत के ग्रामीण इलाकों में यह फिल्म दिखाने के लिए इस फिल्म के कई प्रिंट बनवाने पड़े।

इसके बाद फाल्के ने दो और पौराणिक फिल्में बनाई मोहिनी-भस्मासुर और सत्यवान - सावित्री।अपनी इन तीन फिल्मों को लेकर वे 1915 लंदन गए जहां इन फिल्मों का प्रदर्शन हुआ और बहुत प्रशंसा मिली। यहां यह ङउल्लेखनीयङ है कि अपनी दूसरी फिल्म 'मोहिनी भस्मासुर' में फाल्के ने भारतीय फिल्म इतिहास में पहली बार एक महिला जिनका नाम 'दुर्गाबाई कामत' था से पार्वती की भूमिका कराई । ये मराठी थिएटर में काम करने वाली कलाकार थी । दुर्गाबाई कामत भारतीय सिनेमा में काम करने वाली प्रथम महिला बनी।फाल्के ने कई फिल्में बनाई।

1932 में आई फिल्म 'सेतु बंधन' फाल्के की अंतिम मूक फिल्म थी।

कोल्हापुर नरेश के आग्रह पर फाल्के ने 1937 में अपनी पहली और आखिरी बोलती फिल्म 'गंगावतरण' बनाई । यह फिल्म उनके जीवन की अंतिम फिल्म थी।

फिल्म राजा हरिशचंद्र से अपना कैरियर शुरू करने वाले दादा साहब फाल्के ने अपने 19 साल के फिल्मी करियर में 90 फिल्मों और 26 शार्ट फिल्मों का निर्माण किया।

भारतीय सिनेमा का यह अनुपम सूर्य 73 साल की उम्र में 16 फरवरी 1944 को नासिक में सदा के लिए अस्त हो गया।

भारतीय सिनेमा के पितामह 'दादा साहब फाल्के' को सम्मान देने के लिए भारत सरकार ने 1969 से 'दादा साहब फाल्के पुरस्कार' देना शुरू किया जो भारतीय सिनेमा का सबसे बड़ा पुरस्कार माना जाता है। सन 1971 को भारत सरकार ने दादा साहब फाल्के के सम्मान में एक डाक टिकट भी जारी किया।

भारतीय सिनेमा हमारे दैनिक जीवन का एक अभिन्न हिस्सा बन गया है चाहे वह क्षेत्रीय सिनेमा हो हो या बॉलीवुडी सिनेमा। हमारे समाज में मनोरंजन के लिए सिनेमा एक प्रमुख साधन है। भारतीय सिनेमा अब भारत तक सीमित नहीं है बल्कि इसकी सराहना अंतर्राष्ट्रीय दर्शकों द्वारा भी की जा रही है।

सच की दस्तक के 5 वर्ष पूर्ण होने की हार्दिक शुभकामना

जितेन्द्र गुप्ता

सभासद काली महाल

पंडित दीनदयाल उपाध्याय नगर, जनपद चंदौली

चेयरमैन पद के प्रत्याशी

चैत्र नवरात्रि रेसपी

संवा चावल खीर

संवा के चावल - 100 ग्राम(आधा कप)

- दूध - आधा किलो
- घी - 1 टेबल स्पून
- इलाइची /नारियल
- काजू - 10-12
- बादाम /पिस्ते
- किसमिस/केसर

सवां (वरई, कोदरी, समवत, सामक चावल के नाम से जाना जाता है। गुजरात में इसे सामो और मोरियो कहते है। के चावल साफ कीजिये, अच्छी तरह धो लीजिये और 20 मिनिट के लिये पानी में भिगो दीजिये। अब घी में हल्का तलें।

भारी तले के बर्तन में दूध डाल कर गरम करने रख दीजिये।दूध में उबाल आने के बाद, सवां के चावल डालिये और चमचे से चला दीजिये, फिर से उबाल आने के बाद गैस फ्लेम धीमी कर दीजिये, प्रत्येक 2-3 मिनिट के बाद चमचे से खीर को चलाते रहिये, खीर तले में लगनी नहीं चाहिये।

काजू 4 टुकड़े करते हुये काट लीजिये, बादाम और पिस्ते लम्बाई में पतले काट लीजिये, किसमिस के डंठल तोड़ लीजिये।इलाइची को छील कर बारीक कूट लीजिये।

काजू और किसमिस खीर में बनते समय ही मिला दीजिये, चावल नरम हो गये हैं तथा चावल और दूध चमचे से गिराने पर एक साथ गिरते हैं, तब तो खीर बन चुकी है, चीनी मिलाइये और गैस फ्लेम बन्द कर दीजिये। इलाइची का पाउडर भी खीर में मिला दीजिये। सवां के चावल की खीर तैयार है। सवां के चावल की खीर को प्याले में निकालिये और बादाम, पिस्ते ऊपर से डाल कर सजाइये। सवां के चावल की गरमा गरम खीर अपने व्रत में परोसिये और खाइये।

एलियंस कर रहे हैं प्रेगनेंट

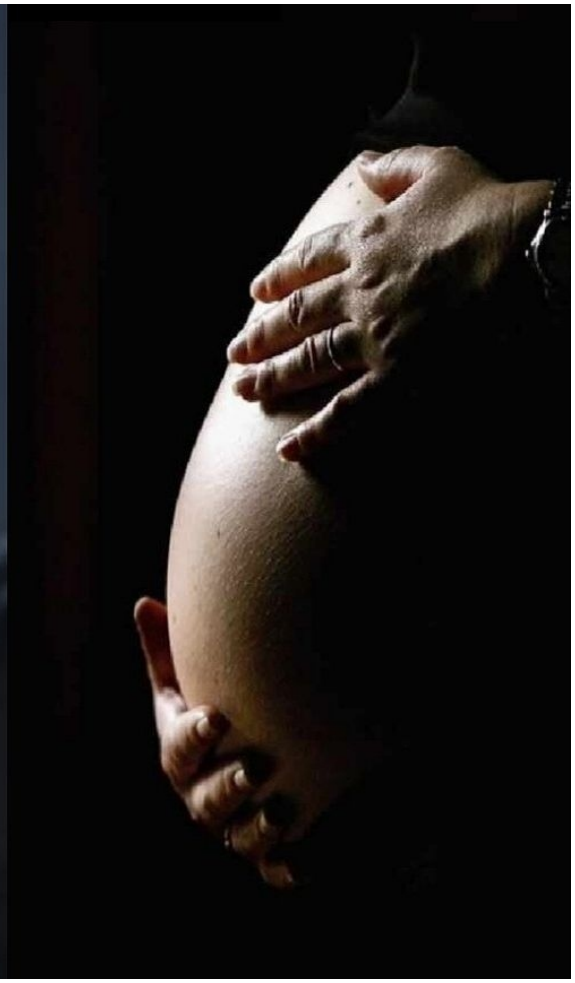

इस हैडिंग को सुनकर आप बिल्कुल मत चौंकिए क्योंकि अमेरिका की महिलाओं ने दावा किया है कि वह ऐसा सचमुच कर रहे हैं। यहां तक कि अमेरिका में बहुत लोग अचानक गायब हो जाते हैं और अचानक कुछ दिन बाद लौट आते हैं पर उन्हें कुछ याद नहीं आता कि वह कहां थे और उनके साथ क्या हुआ? वैसे धरती पर उड़न-तश्तरी आने की घटनाएं कई बार देखने को मिली हैं। 2021 में भी अमेरिका के आर्मी बेस पर एक उड़न-तश्तरी देखी जा चुकी है। बता दें कि हाल ही में कई लोगों ने ये आरोप लगाएं हैं कि यूएफओ ने मनुष्यों के साथ संबंध बनाए हैं और कई महिलाएं गर्भवती भी हो गई हैं। रक्षा खुफिया एजेंसी (डीआईए) ने पेंटागन को दस्तावेज सौंपे हैं, जो 'द सन' ने भी प्रकाशित किए हैं। 'Anomalous Acute and Subacute Field Effects on Human and Biological Tissue' शीर्षक वाली इस रिपोर्ट में यह खुलासा हुआ है। इसमें

अमेरिकी रक्षा मंत्रालय ने उन लोगों के स्वास्थ्य की जांच की जिन्होंने 'पैरानॉर्मल एक्सपीरियंस' का दावा किया था। इनमें से कुछ मामले 'रहस्यमय गर्भावस्था' के भी थे। पेंटागन की जारी इस रिपोर्ट में उन प्रभावों की एक सूची शामिल की गई जो किसी एलियन या यूएफओ के करीब जाने पर देखे जा सकते हैं। अमेरिका स्थित एक अनुसंधान एजेंसी MUFON ने एक सूची तैयार की है। यह मनुष्यों और उनकी आवृत्ति पर ळइध देखे जाने के जैविक प्रभावों की बात करती है। इस रिपोर्ट में अपहरण, गर्भावस्था, यौन मुठभेड़, टेलीपैथी का अनुभव और कथित टेलीपोर्टेशन जैसी विचित्र घटाओं का जिक्र है। रिपोर्ट में कहा गया है कि यूएफओ यानी एलियन देखे जाने से गवाह घायल हो सकते हैं, विकिरण से जलने, मस्तिष्क की समस्याओं और क्षतिग्रस्त नसों से पीड़ित हो सकते हैं। इतना ही नहीं,अब तक एलियंस और मनुष्यों के बीच यौन मुठभेड़ों के पांच उदाहरण पाए गए हैं।इसमें 42 मामलें मेडिकल फाइलों से हैं और 300 केस 'अप्रकाशित' हैं, जिसमें इंसान घायल हुए। नतीजों से जुड़े दस्तावेजों के सार्वजनिक होने के बाद सोशल मीडिया पर कुछ लोगों ने इसका मजाक उड़ाया कि हम भी मोटे नहीं बल्कि रहस्यमयी तरीके से प्रेग्नेंट हैं। बता दें कि डीआईए के लिए तैयार की गई रिपोर्ट में यह भी चेतावनी दी गई है कि ऐसी वस्तुएं संयुक्त राज्य के हितों के लिए खतरा हो सकती हैं। रिपोर्ट में कहा गया है, 'मनुष्यों को विचित्र वाहनों के संपर्क में आने से घायल पाया गया है।' यह रिपोर्ट पेंटागन के गुप्त यूएफओ कार्यक्रम, एडवांस्ड एविएशन थ्रेट आइडेंटिफिकेशन प्रोग्राम (AATIP) से संबंधित डीआईए दस्तावेजों के 1500 से अधिक पृष्ठों का हिस्सा है AATIP एक गुप्त पेंटागन कार्यक्रम था जो यूएफओ का अध्ययन करने के लिए 2007 और 2012 के बीच चला।

आप को याद होगा 2020 में गैलेक्टिक फेडरेशन सबसे ज्यादा चर्चा में था। बता दें कि टीवी पर हिस्ट्री चैनल पर आने वाले प्रोग्राम एनसिएंट एलियन जिसे होस्ट करते हैं जॉर्जियो ए. टसोकोलोस व अनेकों फिल्में ने यही बताने की कोशिश की है कि इस अनंत ब्रह्मांड में हम अकेले नहीं हैं। एक गैलेक्टिक फेडरेशन है जिसकी पुष्टि आज इजरायल के पूर्व अंतरिक्ष सुरक्षा प्रोग्राम के प्रमुख और इजरायल के सैटलाइट कार्यक्रम के जनक कहे जाने वाले महान वैज्ञानिक हैम इशेद ने दावा किया है कि ब्रह्मांड में एलियन मौजूद हैं और उनका अमेरिका तथा इजरायल के साथ डायरेक्ट संपर्क भी है। यही नहीं अमेरिका के निवर्तमान राष्ट्रपति डोनाल्ड ट्रंप इस बात को अच्छी तरह से जानते हैं। उन्होंने यह भी दावा किया कि एलयिन्स की मौजूदगी को अभी इसलिए छिपाकर रखा गया है क्योंकि मानवता अभी इसके लिए तैयार नहीं है। करीब 30 साल तक इजरायल के स्पेस सिक्यॉरिटी प्रोग्राम को संभालने वाले हैम इशेद ने कहा कि एक 'गैलेक्टिक फेडरेशन' बनाया गया है जो अमेरिका के साथ गुप्त समझौते के तहत मंगल ग्रह पर जमीन के अंदर एक अड्डा चला रहा है।प्रफेसर इशेद जब वर्ष 2011 में रिटायर हुए थे तब इजरायली मीडिया ने उन्हें 'इजरायल के सैटलाइट कार्यक्रम का जनक' करार दिया था। उन्होंने अपनी किताब में UFO को लेकर कई सिद्धांतों के बारे में जिक्र किया है। ईशेद ने एक शोधकर्ता के हवाले से कहा कि अंतरिक्ष में केवल इंसान ही नहीं है वहां और भी कोई है और कई राज़ जिनसे सम्पूर्ण पृथ्वी की मानवजाति से गोपनीय रखा जा रहा है कि कहीं और देश भी सम्पर्क करके विकसित न बन सकें या यह भी कि मानवता यह सहने को अभी तैयार नहीं पर आखिर! कब तक? यही सवाल के बीच आज पूरी दुनिया झूलती नज़र आ रही है। सच तो यह है कि अमेरिका और रूस दोनों एलियन की जानकारी पूरी दुनिया से गोपनीय रखना चाहते हैं। सन्

2021 में अमेरिका (America) के नेवाडा में स्थित एरिया 51 (Area 51) अमेरिकी वायुसेना एक बेस है यहां उड़नतश्तरी देखी गयी थी, जिसे लेकर तरह-तरह की धारणाएं बनी हुई हैं। कोई कहता है कि ये एलियंस (Aliens) का बेस है तो किसी का कहना है कि यहां पर अमेरिका अपने सीक्रेट हथियारों को टेस्ट करता है। इस बेस के चारों ओर कड़ी सुरक्षा रहती है और गूगल पर भी कोई ज्यादा सर्च करे तो उस पर भी अमेरिका की वक्रदृष्टि बनी रहती है। पर कहते हैं ना सच अगर सच है तो ज्यादा समय तक छिपा नहीं रह सकता। कितनी अजीब बात है परग्रही पूर्वजों का सच आखिर! हम सब से छिपा कर यह विकसित देश आखिर! साबित क्या करना चाहते हैं जबकि गूगल पर मौजूद हिटलर की एलियन के साथ वाली फोटो पर शोध होता रहता है और लोग उसे सच ही बताते हैं, अजीब बात है कि हिटलर भी

रहस्यमयी तरह से गायब हैं कुछ लोग कहते हैं हिटलर पर टाईम मशीन थी और कुछ लोग तो यहां तक दावा करते हैं कि सुभाष चंद्र बोस जी को भी हिटलर के अजीबो-गरीब वैज्ञानिक प्रयोग मशीनों की जानकारी थी क्या पता दोनों गुमनाम हैं पर क्यों? कहाँ? क्या वे परग्रही पूर्वजों तक पहुंच गये थे। ये ऐसे अनसुलझे सवाल हैं कि मुझ आकांक्षा को भी इनके जवाब तलाशने में बहुत मेहनत करनी होगी और सारी दुनिया की खूफिया ऐजेंसियों को भी, आखिर! एलियन का सच कब प्रगट होगा?

सच की दस्तक के 5 वर्ष पूर्ण होने की हार्दिक शुभकामना

डॉ. उमाशरण पाण्डेय

मानसरोवर हास्पिटल

बाल रोग विशेषज्ञ, डिप्टी सी.एम.ओ. वाराणसी

जी.टी. रोड, अलीनगर, पं. दीनदयाल उपाध्याय नगर,

(मुगलसराय), चन्दौली

बौद्धिक बेईमानी और राष्ट्र की पीड़ा

पंकज जगन्नाथ जयसवाल

पिछले कुछ दशकों से, 'बौद्धिक बेईमानी' की विशिष्ट मानसिकता बढ़ रही है। कई लोगों की विचार प्रक्रिया चरित्र विकास के बजाय व्यक्तित्व/छवि बनाने की होती है। यह समाज और देश की कीमत पर कम समय में सब कुछ हासिल करने का सबसे तेज़ तरीका है। एक प्रसिद्ध लेखक, स्टीफन कोवे ने एक बार पिछले 200 वर्षों में संयुक्त राज्य अमेरिका में लिखी गई सफलता पर साहित्य का अध्ययन किया। उन्होंने पाया कि पहले लगभग 125 वर्षों तक, चरित्र विकास सफलता के लिए महत्वपूर्ण था; हालांकि, बाद के वर्षों में, चरित्र विकास के पहलुओं की उपेक्षा करते हुए, व्यक्तित्व या छवि निर्माण ने कब्जा कर लिया है, जिसके परिणामस्वरूप 'बौद्धिक बेईमानी' के साथ कई सफल कहानियां और सही पथ पर चलने वालों के लिए एक कठिन समय है। यह घटना भारत में भी देखी गई है। सोशल मीडिया प्लेटफॉर्म, विज्ञापनों के माध्यम से छवि निर्माण के माध्यम से सत्ता, प्रसिद्धि और धन प्राप्त करने का स्वार्थी एजेंडा, और विनाशकारी विदेशी एजेंटों से प्राप्त बड़ी मात्रा में धन का उपयोग। चरित्र विकास और

व्यक्तित्व/छवि विकास में क्या अंतर है? जब चरित्र विकास पर जोर दिया जाता है, तो व्यक्ति समाज और देश के विकास के लिए खुद को बेहतर बनाने, विश्वास करने और कार्य करने के लिए आवश्यक नैतिक मूल्यों को आत्मसात करने के लिए आंतरिक लक्षणों को विकसित करने का इरादा रखता है। यह एक लंबी प्रक्रिया है जिसके लिए शारीरिक, मानसिक और आध्यात्मिक स्तरों पर बहुत अधिक आत्म-प्रयास की आवश्यकता होती है। चरित्र निर्माण के माध्यम से विकसित किए जा सकने वाले चरित्र लक्षणों में ईमानदारी, मदत करना और देखभाल करना, प्रेम और अपनेपन से समाज और देश की निस्वार्थ सेवा, राष्ट्र सबसे पहले रवैया और सामाजिक समानता शामिल हैं।

जबकि छवि निर्माण हमेशा सतह के स्तर पर केंद्रित रहा है। आंतरिक विशेषताओं के विकास पर कोई ध्यान नहीं, केवल नकली आख्यानों का उपयोग करके जनता में छवि बनाने पर ध्यान केंद्रित करना, केवल स्वार्थी उद्देश्यों के लिए अपनी बौद्धिक क्षमता का उपयोग करके जनता के बीच सकारात्मक छवि बनाने के लिए अलग अलग हथकंडे अपनाना। ये लोग स्पष्ट रूप से जानते हैं कि बाहरी और झुठे व्यवहारिक रूप से ही अद्भुत दिखने के बावजूद नकली और सतही हथकंडे अपनाकर लोगों के दिमाग में जगह कैसे बनाई जाए। यह जल्दी होता है, लेकिन इसके खुदपर, समाज और राष्ट्र के लिए दीर्घकालिक परिणाम होते हैं। दुर्भाग्यपूर्ण बात यह है कि कई युवा चरित्र विकास के बजाय छवि निर्माण में तल्लीन हो रहे हैं।

भगवद्गीता में, भगवान कृष्ण बताते हैं कि एक नेता का चरित्र उसकी छवि से अधिक महत्वपूर्ण क्यों है।

यत् यत् आचरति श्रेष्ठः,
तत् तत् एव इतरो जनः।
स यत् प्रमाणं कुरुते,
लोकः तत् अनुवर्तते।।
श्रीमद् भगवद्गीता-3/21

महापुरुष के कार्यों का दैनिक जीवन के सभी पहलुओं में सामान्य मनुष्य द्वारा अनुकरण किया जाता है। आम लोग उन्हीं मानकों का अनुसरण करते हैं जो उन्होंने अपने अनुकरणीय व्यवहार के माध्यम से निर्धारित किए हैं।

परिणामस्वरूप, समाज के प्रत्येक नेता को ऊपर बताए गए तथ्यों को ध्यान में रखना चाहिए और उसके अनुसार कार्य करना चाहिए। इसीलिए , एक शिक्षक को 'आचार्य' कहा जाता है।

विवेकः सह संयत्या,
विनयो विद्यया सह।
प्रभुत्वं प्रश्रयोपेतम् ,
चिह्नमेतत् महात्मनाम्//

कुशल और विचारशील अभिव्यक्ति के साथ बुद्धि, विनम्रता के साथ शिक्षा, शिष्टाचार के साथ नेतृत्व - ये 'महान लोगों' की विशेषताएं हैं जो जीवन में प्रशंसा और सफलता प्राप्त करते हैं। हालाँकि बौद्धिक बेईमानी सामाजिक और राष्ट्रीय चरित्र के विकास पर स्वार्थ और लालच के माहौल को बढ़ावा देना चाहती है। अतीत में लाखों लोग पीड़ित हुए हैं, और वर्तमान स्थिति के आधार पर, भविष्य में दुख कई गुना बढ़ जाएगा। कई राजनीतिक नेता, विभिन्न धर्मों के संत और अन्य हस्तियां आम लोगों की भावनाओं और अज्ञानता का शोषण करके तत्काल प्रसिद्धी, धन और सत्ता प्राप्त करने के लिए नकली छवियों के निर्माण में विश्वास करते हैं। एक प्रसिद्ध पत्रिका ने 'वे कहाँ हैं?' शीर्षक से एक लेख प्रकाशित किया था। उन नेताओं के अपने निष्कर्षों के आधार पर जिन्होंने 1975 से 1985 तक अधिक मीडिया का ध्यान आकर्षित किया और एक सकारात्मक छवि बनाई। यह निष्कर्ष निकाला गया कि मीडिया प्रचार के बिना जमीन पर समाज और देश के कल्याण के लिए काम करने वाले लोगों और संगठनों ने लोगो के दिमाग में अपनी स्थिति को और मजबूत किया। जबकि जो लोग दिन-रात मीडिया प्रचार के लिए तरसते थे, उनकी छवि बनाने की प्रक्रिया में जमीन खो गई या उन्हें भारी नुकसान हुआ। नतीजतन, यह छवि-निर्माण प्रक्रिया, आकर्षक और अहंकार-संतोषजनक होने के साथ-साथ उन सभी के लिए लंबे समय मे अधिक पीड़ा की ओर ले जाती है। एक उदाहरण यह है कि इंडिया अगेंस्ट करप्शन आंदोलन के परिणामस्वरूप सार्वजनिक चेहरे बनने वाले कई नेताओं के दिमाग में एक अलग एजेंडा था। क्योंकि लोग ईमानदार नेताओं की तलाश में थे, इसलिए उन्होंने इस मंच का इस्तेमाल ईमानदारी की छवि पेश करने के लिए किया। इस छवि-

निर्माण प्रक्रिया ने उन्हें कई लोगों के मन में स्थान स्थापित करने में बहुत सहायता की। अब उनका एक नेता अपने गिरोह के साथ मिलकर देश को सामाजिक, आर्थिक और आध्यात्मिक रूप से तबाह करने का काम कर रहा है। लोगों की मानसिकता के अनुरूप विज्ञापनों और मनगढ़ंत कहानियों पर भारी खर्च अंततः सभी के लिए तबाही का कारण बन रहा है। जितनी जल्दी लोग इस मानसिकता को समझेंगे, हमारे समाज और राष्ट्र के लिए उतना ही अच्छा होगा। यह नई मानसिकता बौद्धिक बेईमानी को तुरंत स्वीकारती और मानती है, लेकिन अच्छे इरादों वाले ईमानदार और सांस्कृतिक रूप से निहित व्यक्ति पर संदेह करती है। इस मानसिक दिवालियापन को उचित व्यक्तिगत और राष्ट्रीय चरित्र विकास के माध्यम से पोषित किया जाना चाहिए। वर्तमान केंद्र सरकार को सच्चे गुमनाम नायकों को राष्ट्रीय सम्मान देते हुए देखना वास्तव में प्रेरणादायक है, जो समाज और देश की भलाई के लिए अपने जीवन का योगदान देते हैं और मीडिया द्वारा उनपर कभी ध्यान नहीं जाता है। यह बदलाव निस्संदेह भविष्य की पीढ़ियों के स्वयं, समाज और राष्ट्र के हित में चरित्र विकास के प्रति दृष्टिकोण को प्रभावित करेगा।

चरित्र विकास राष्ट्र निर्माण का पर्याय है !!

■■

विज्ञापन शुल्क निम्न प्रकार से है

- **कलर पेज फूल पेज ₹ 20000 मात्र**
- **हाफ पेज ₹10000 मात्र**
- **ब्लैक एंड व्हाइट फूल पेज ₹12000 मात्र**
- **हाफ पेज ₹6000 मात्र**
- **रंगीन पेज पर छोटा विज्ञापन ₹2000 मात्र**
- **ब्लैक एंड व्हाइट पर छोटा विज्ञापन ₹1000 मात्र**

विज्ञापन के लिए शुल्क निम्न बैंक खाता में जमा करा सकते हैं:

Account Name:	**Sach Ki Dastak**
A/c. No. :	**13751652000024**
IFSC Code :	**PUNB0137510**
Bank:	**Panjab National Bank**

Gpay-

(1) 9045610000
(2) 9621503924

निशानेबाज़ मानवी का शौक़ ही बना उसका जुनून

चन्द्रकान्त पाराशर
खनेरी शिमला हिल्स

आकलैंड विद्यालय शिमला में कक्षा 6ठी की विद्यार्थी रही थी उस समय जब मानवी सूद ने शिमला स्थित इंदिरा गांधी खेल परिसर में पहला कदम रखा था और वह भी तायकोंडों मार्शल आर्ट सीखने के लिए । कुछ दिन इस विधा में अभ्यास के बाद उसके मन में खेलों में ही कुछ अलग करने की चाह पनपने लगी ।इसी उत्सुकतावश वह खेल- परिसर में ही अन्य खेलों को दूर से देखने परखने लगी ।

धीरे-धीरे वहाँ अन्य बच्चों को शूटिंग रेंज में अभ्यास करते देखकर इस खेल के प्रति आकर्षित हुई और वहीं एक अच्छा निशानेबाज बनने का सपना बुना। उन्होंने अच्छी तरह सोच-समझकर एयर रायफल प्रतियोगिता को चुना तथा वह मात्र 11 वर्ष की आयु में हीनिशानेबाजी प्रतियोगिता में भाग लेने भी लग गयी थी ।

इस उभरती प्रतिभावान खिलाड़ी का जन्म 4फ़रवरी 2006 को हिमाचल प्रदेश राज्य की राजधानी शिमला में एक

व्यवसायी परिवार में हुआ था ।परिवार भी इस खेल के प्रति आगे बढ़ने के लिए मानवी को पूरा सहयोग देने के प्रति दृढ़ संकल्प है ।

उनके पिता राजीव सूद व माँ अर्चना सूद दोनों का ही विश्वास है कि वैसे भी लड़कियाँ स्वभाव से मेहनती,कमिटेड व फलेक्सिबल लर्नर के साथ साथ उनमें एकाग्रता का स्तर भी ज़्यादा होता है उनमें अपेक्षाकृत अधिक धैर्य होता है जिसकी वजह से उनके अंदर एक स्थिरता बनी रहती है । संभवतः यही गुण मछली की आँख भेदने अर्थात् लक्ष्य-संधान करने में सर्वोपरि माना जाता है।

मानवी सूद पहली बार उस समय राज्य खेल परिदृश्य पर चर्चा में आइ जब वर्ष 2018में अंडर 15 एन आर कटेगरी में ज़िला स्तरीय स्पर्धा में उन्होंने 10 मी राइफल प्रतियोगिता में स्वर्ण पदक जीता था। इस प्रतियोगिता में कुल 400 पोईंट के लिए 40 शॉट लगाने निर्धारित थे । इसमें मानवी ने 351 पोईंट हासिल कर गोल्ड पर क़ब्ज़ा किया था ।

मानवी का मानना है कि निशानेबाज़ी एक प्रतिस्पर्धात्मक किंतु बेहद रोमांचक खेल है ।इस खेल का शौक़ ही उसका धीरे धीरे जुनून बंनने की ओर अग्रसर है ।प्रायः यही जुनून किसी खिलाड़ी को सफलता के शिखर तक पहुँचाता भी है ।

गत वर्ष नवम्बर माह में भोपाल में आयोजित 64 वीं राष्ट्रीय शूटिंग चैंपियनशिप प्रतियोगिता में हिमाचल प्रदेश का प्रतिनिधित्व कर चुकी हैं और वह चौथी अंतरराष्ट्रीय शूटिंग प्रतियोगिता में भारतीय टीम के चयन के लिए भारतीय राष्ट्रीय राइफल संघ द्वारा आयोजित चयन ट्रायल के लिए भी क्वालिफ़ाइड है ।अक्टूबर 2021 में, देहरादून में पहली स्नाइपर शूटिंग चैंपियनशिप के दौरान 'चैंपियन ऑफ द चैंपियन' का खिताब भी मानवी द्वारा जीता गया है।

उनके कोच सूबेदार (सेवानिवृत्त) रवींद्र प्रकाश ने एक प्रश्न का उत्तर देते हुए बताया कि निशानेबाज़ी-अभ्यास में मेरे अधीन प्रशिक्षण ग्रहण करने वाले अब तक 15बच्चों ने अंतरराष्ट्रीय चयन ट्रायल के लिए क्वालिफ़ाई किया है ,व राष्ट्रीय स्तर पर टीम-स्पर्धा में तीन पदक भी जीत चुके है । अधिकांशतः महिला निशानेबाज़ सटीक प्रदर्शन करने में आगे रहती हैं । हिमाचल जैसे पहाड़ी राज्य में महिलाएं पुरुषों की अपेक्षा इस खेल में कम संख्या में आगे आतीं हैं लेकिन उनके प्रदर्शन/ परिणाम पुरुषों की अपेक्षा अधिक अच्छे आ रहे हैं ।

कोच महोदय ने मानवी सूद की हौसला अफ़जाही करते हुए कहा कि 'हम इस निशानेबाजी के खेल में उनके उज्ज्वल कैरियर के लिए शुभकामनाएं देते हैं और वह निश्चित रूप से हिमाचल राज्य के साथ-साथ भारत देश का भी नाम रोशन करेंगी।'

यहाँ ज्ञातव्य है कि पुराने समय में राजा महाराजाओं का मनोरंजक शौक़ रहे निशानेबाज़ी का अब वर्तमान समय में स्तर बेहद बढ़ चुका है। निशानेबाजी को शूटिंग का रूप देकर ओलंपिक खेलों में भी शामिल किया जा चुका है।

निशानेबाजों के लिए खास तौर से डिजाइन की जाने वाली आकर्षक वेशभूषा जिसमें विशेष प्रकार की जैकेट, ट्राउजर, जूते;सिर पर कैप जिन्हें आमतौर पर पहनकर चलना भले ही मुश्किल हो, लेकिन राइफल शूटिंग करने वालों का टशन देखकर आज लोग विशेषकर युवा इस खेल की तरफ खूब आकर्षित होते हैं।

खुद रहें सुरक्षित, दूसरों को रखें सुरक्षित

क्या करें और क्या ना करें

क्या करें

बार-बार हाथ धोएं। जब आपके हाथ स्पष्ट रूप से गंदे न हों, तब भी अपने हाथों को अल्कोहल - आधारित हैंड वॉश या साबुन और पानी से साफ करें

छींकते और खांसते समय, अपना मुंह व नाक टिशू/रूमाल से ढकें

प्रयोग के तुरंत बाद टिशू को किसी बंद डिब्बे में फेंक दें

गर्मी का विकल्प : पोर्टेबल एसी

सुटेबल और कम कीमत का एसी।ऐसी यानी एयर कंडीशनिंग सिस्टम और यह आपको गर्मी में सामान्य मौसम का एहसास कराता है। AC की वजह से आप अपने घर में चैन की बंसी बजा सकते हैं। आजकल की गर्मियों में जहां टेंपरेचर 45 डिग्री सेल्सियस से आगे बढ़ते बढ़ते कब 48 पहुंचता है 50 पहुंचता है और कई जगहों पर तो उससे भी अधिक पहुंचता है। कई बार समस्या ऐसी आती है कि लोगों के पास विंडोज या स्प्लिट AC इंस्टॉल करने का मेथड नहीं होता है या उनके घर में जगह नहीं होती है। ऐसे में आपके पास विकल्प है पोर्टेबल एसी का।जी हां! पोर्टेबल एसी एक ऐसा विकल्प है जिसे इस्तेमाल करके आप गर्मी में खुद को राहत पहुंचा सकते हैं। सच बात तो यह है कि यह किसी भी कमरे में आसानी से फिट हो जाते हैं और इसे लगाने में किसी प्रकार का कोई झंझट भी नहीं होता है। इतना ही नहीं ऑफलाइन मार्केट के साथ-साथ ऑनलाइन मार्केट से भी आपको पोर्टेबल एसी ऑर्डर कर सकते हैं। जैसे आप किसी कूलर को यहां से वहां शिफ्ट करते हैं, वैसे ही ऑनलाइन पोर्टेबल एसी भी आप शिफ्ट कर सकते हैं। यह खासकर किरायेदारों के लिए भी काफी काम का होता है, क्योंकि जब वह घर शिफ्ट करते हैं तो इधर-उधर AC लगाने से वह बचना चाहते हैं। यह उन्हें काफी झंझट वाला काम लगता है। ऐसे में

पोर्टेबल एसी लीजिए और अपना काम आसान बना लीजिये। आपको बता दें कि कई कंपनियों के पोर्टेबल एसी आपको 30000 की रेंज में मिल जाएंगे, जैसे कि ब्लू स्टार के 1 टन पोर्टेबल एसी की बात करें तो ₹29999 के आसपास मुख्य ई-कॉमर्स वेबसाइट पर आपको मिल जाएगा।पोर्टेबल एसी का मतलब कोई काम चलाऊ ऐसी नहीं है, वास्तव में इसमें एंटी बैक्टीरियल सिल्वर कोटिंग इत्यादि इस्तेमाल की गए होते हैं और दूसरे अन्य AC की तरह इन्हें रिमोट के माध्यम से आप कंट्रोल भी कर सकते हैं। अब सवाल उठता है कि पोर्टेबल एसी काम कैसे करता है, तो आपको बता दें कि सामान्य रूप से पूरे कमरे की गर्म हवा को पोर्टेबल एसी ठंडा करता है। इसकी जो यूनिट होती है वह की खिड़की से जुड़ी एक ट्यूब के माध्यम से गर्म हवा बाहर निकाल देती है। इसे यूनिट से कमरे की नमी के लेवल को बनाए रखने में मदद मिलती है। पोर्टेबल एयर कंडीशनर खिड़की यूनिट के लिए एक एक्स्ट्रा ऑप्शन है। हालांकि इसे सेट करना बेहद आसान है और बेहद कॉम्पैक्ट भी।

तो अगर आपको भी बार-बार घर बदलना पड़ता है तो पोर्टेबल एयर कंडीशनर जरूर ट्राई करें। ज्यादातर नेताओं की रैलियों के मंचों आदि पर यही तो यूज करते हैं या इससे मिलते-जुलते। आपका बजट अलाऊ करे तो आप भी इसका आनंद ले सकते हैं।

■ ■

सच की दस्तक

कला, साहित्य, संस्कृति व सामाजिक सरोकार की मासिक पत्रिका

पाठकों से निवेदन.

प्रिय पाठक बन्धु,

सच की दस्तक मासिक पत्रिका आप की अपनी पत्रिका है। हिन्दी साहित्य और भाषा के विकास के लिए आपका सहयोग अपेक्षित है। पत्रिका निरन्तर आप के घर पहुँचती रहे इसलिए निम्न फार्म भरकर शीघ्र भेजने की कृपा करें या हमारे प्रतिनिधि से सम्पर्क करें।

श्री/श्रीमती /कुमारी.....
पता.....
.....
.पिन कोड..... मोबाइल संख्या.....
ईमेल.....

वार्षिक सदस्यता - 300/- रुपए मात्र।

पंचवर्षीय सदस्यता - 1200/- रुपए मात्र।

पाठक अपनी सदस्यता राशि निम्न खाते में जमा कर सकते हैं और जमा करने के बाद मोबाइल पर अवश्य सूचित कर देंगे।

Sach Ki Dastak

ब्रजेश कुमार

A/c. No. : 13751652000024

सम्पादक, सच की दस्तक

IFSC Code : PUNB0137510

Panjab National Bank

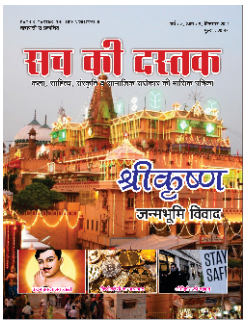

पता : 1215/A सुभाष नगर, दीनदयाल उपाध्याय नगर, चन्दौली

पिन कोड - 232101, मोबाइल नम्बर - 9621503924

'शुरू करें जिंदगी...'

मनोज शाह 'मानस'

उस दहलीज से फिर शुरू करें जिंदगी ।
जिस दहलीज पर छोड़ आए हैं खुशी ।।

हालात ने सिखाया बातें सुनना सहना,
वरना फितरत से बाद शाह थे हम नसी ।

जिस मोड़ पर... छोड़ आए हैं मोहब्बत,
मौका मिल जाए तो शुरू करें आशिक़ी।

जिस्म की चाह में फरेब ही मिलता रहा,
रूहों में उतरे नहीं रहें मोहब्बत में बंदगी ।

गर्म हवाओं ने हिलाया होगा दरवाज़ा,
दरवाजे से लौट आया होगा बेबसी ।

आईना में स्वागत है सभी का संग्रह नहीं,
'इश्क' इश्क़ चाहे मेहरबानी नहीं महजबी।

उस दहलीज से फिर शुरू करें जिंदगी ।
जिस दहलीज पर छोड़ आए हैं खुशी ।।

■■

स्वर कोकिला

श्री चन्द्र प्रकाश शर्मा 'आक्रोश'

मधुर स्वर साम्राज्ञी कोकिला , हिम गिरी शिखर पर जा पाई ।
कितनी कर ली गीत साधना , दूजी कभी नहीं चढ़ पाई ।।

स्वर साधिका तू रस दायनी , न तेरा जग में कोई सानी।
कभी रस घोलती कानों में , अब आंख में दे गयी पानी।।

चली हो जहां से दूर बहुत, पर तुम कैसे जा पाओगी।
क्या सब रीते गागर भरने , नहीं कभी वापस आओगी ?

तुम बिन सूने साज हो गये , संगीत कक्ष विरान हो गये ।
बाग- बाग होते सुन गाने , सबके मन ही म्लान हो गये।।

स्वर अमृत निर्झर से तुमने , जैसे गंगधार उतार दी ।
शब्दों को सुरों में ढालकर , नव वधू लय-ताल सँवार दी।

■■

कार्यालय नगर पालिका परिषद्, पं0 दीनदयाल उपाध्याय नगर - चन्दौली।

अरविंद कुमार शर्मा
नगर विकास मंत्री
उत्तर प्रदेश सरकार

स्वच्छ भारत
एक कदम स्वच्छता की ओर

स्वच्छ भारत
एक कदम स्वच्छता की ओर

श्री संजीव सिंह
(जिलाधिकारी - चन्दौली)

देश के सबसे बड़े स्वच्छता के त्योहार स्वच्छ सर्वेक्षण 2022 को सफल बनाने हेतु नगर पालिका परिषद, पं0 दीनदयाल उपाध्याय नगर जनपद-चन्दौली के सम्मानित नागरिको से अपील।

अपील

1. खुले में शौच कदापि न करें। घरेलू सामुदायिक व सार्वजनिक शौचालय का प्रयोग करें।
2. डोर-टू-डोर कूड़ा कलेक्शन में निकाय के कर्मियों का सहयोग करें।
3. हमेशा गीला कचरा हरे डब्बें में व सूखा कचरा नीले डब्बे में डालें।
4. सफाई हो जाने के पश्चात कूड़ा नाली व सड़क पर न फेंके।
5. शासन द्वारा पालिथीन/थर्माकोल के क्रय-विक्रय, भण्डारण, वितरण, प्रयोग आदि को पूर्णतः प्रतिबन्धित कर दिया गया है।
6. दैनिक जीवन में जूट व कपड़े के थैलों का प्रयोग करें, और दूसरों को भी प्रेरित करें।
7. पानी का नल खुला न छोड़े। जल ही जीवन है। सरकारी देयों का भुगतान करें।
8. घरेलू एवं व्यवसायिक संस्थानों में जल संचय करें।
9. वृक्ष लगाये व वातावरण को प्रदूषण से बचाये।

(कृष्ण चन्द्र)
अधिशासी अधिकारी
नगर पालिका परिषद
पं0 दीनदयाल उपाध्याय नगर
चन्दौली

(श्री सुनील प्रसाद)
सफाई एवं खाद्य निरीक्षक,
नगर पालिका परिषद
पं0 दीनदयाल उपाध्याय नगर
चन्दौली

(सन्तोष खरवार)
अध्यक्ष
नगर पालिका परिषद
पं0 दीनदयाल उपाध्याय नगर
चन्दौली

सौजन्य से : - नगर पालिका परिषद, पं0 दीनदयाल उपाध्याय नगर - चन्दौली।

RNI: UPHIN/2017/75716

SACH KI DASTAK

(A MONTHLY HINDI JOURNAL)
C-6/2-M, NEAR CHETGANJ THANA,CHETGANJ, VARANASI
Website : www.sachkidastak.com, E-mail : sachkidastak@gmail.com
Mob. : 8299678756, 9598056904

APRIL,2022
PRICE : RS. 20/-

EDITOR : BRAJESH KUMAR
NEWS EDITOR : AKANSHA SAXENA

श्रीराम जन्मोत्सव तथा मजदूर दिवस की हार्दिक शुभकामनायें

दीपक कुमार आर्य

(पौत्र- स्वतंत्रता सेनानी स्वर्गीय केदारनाथ आर्य वैद्य)

जनपदीय चेयरमैन व प्रभार पं० बंगाल
विशाल भारत संस्थान जनपद चन्दौली
नगर अध्यक्ष (पि० मोर्चा)
पं० दीनदयाल नगर, जिला : चन्दौली
भारतीय जनता पार्टी